HARI OM JAPO

BY CHANDRA BRAHAKAR

INDEX

1. हरि ओम जपो मन चैन यहाँ। 7

2. हरि बोलो हरि हरि ही बोलो। 7

3. दिल उदास यह गाना चाहे। 8

4. हरि मैं गीत तुम्हारे गाऊँ। 8

5. दिल नहीं लगता हमारा। 9

6. जी नहीं लगता हमारा। 9

7. काटे कटती ना यह रैना। 10

8. छिप कहाँ गये तुम सांवरियां। 10

9. तेरे नाथ खिलौने है हम। 11

10. ना शान्ति मिली जीता हारा। 11

11. पागल मन बहला ले अपना। 12

12. यह बहाते नयन पानी। 12

13. हरि से प्रीति बढ़ा ना पाया। 13

14. मन खोज रहा, मन भटक रहा। 13

15. व्याकुल मन मेरा किसे कहूँ। 14

16. जीवन में दर्द छिपा इतना। 14

17. थके यहाँ चलते चलते। 15

18. मन नाचे तेरे संग बालम। 15

19. तेरा जीवन तू मालिक। 16

20. नियति के हम तो खिलौने। 16

21. हरि कृपा सदा चाहूँ तुमसे। 17

22. राम निज की शरण में लो। 17

23. तुमने रूलाया रोये यहाँ पर। 18

24. बीत गये दिन तुम ना आये। 18

25. हरि तुम राखो लाज हमारी। 19

26. मन काहे तू नयन बहाये। 19

27. सदा जपें ना तोड़ो बन्धन। 20

28. देख ले नजरें उठा कर। 20

29. बरस बरस कर आँखे सूखी। 2130. हरि हरि मेरे प्राण पुकारें। 21

31. कितने नीर बहा ले रो ले। 22

32. बने हुए तुम अन्तर्यामी। 22

33. डोल रही है मेरी नैया। 23

34. दुनिया में ना कोई जाने। 23

35. थक चुके हम हार कर अब। 24

36. चले न पहुँचे, रहे भटकते। 24

37. जीने को जी रहे यहाँ हम। 25

38. बोलो क्या गुनाह मेरा। 25

39. जायें कहाँ कुछ न दीखे। 26

40. मत मान यहाँ मन में मन दुख। 26

41. अँखियां देखें पथ को। 27

42. पिया न आये मेरी गली। 27

43. जीवन है जीना ही होगा। 28

44. हरि नयन बसा इन अँखियों में। 28

45. तुम करो कृपा गुलशन महके। 29

46. एक गम हो तो कहें हम। 29

47. जग में रस मोहिं कुछ न आवे। 30

48. ईश कृपा करना तुम हम पर। 30

49. जान सके ना हरि की माया। 31

50. साथ मतलब का यहाँ सब। 31

51. चैन न आवे रहा न जावे 32

52. हरि हरि कहते बीते जीवन। 32

53. चले चल कर थक गये हम। 33

54. मन रोये तुमको खो मोहन। 33

55. देख लो नजरें उठाकर। 34

56. याद करूँ तुमको नहीं आवे। 34

57. ईश कृपा करना तुम हम पर। 35

58. ना हँस पाये ना रो पाये। 3559. खेल तू कितने खिलाये। 36

60. दिल नहीं लगता हमारा। 36

61. हरि की अन्तस में ज्योति जला। 37

62. तेरी मर्जी चलते हम। 37

63. हरि जप हरि जप यह कटे सफर। 37

64. हरि तुम्हारे दास हैं हम। 38

65. हरि प्रीति करो हो शरणाई। 39

66. तुम दीनबन्धु जग के पालक। 39

67. सूना लागे तुम बिन मोहन। 40

68. दीपमाला से सजाऊँ। 40

69. हरि ओम् कहो मन ओम् कहो। 41

70. हरि तुझे हम ढूंढ़ते हैं। 41

71. शुभ हो सदा जिन्दगी में प्रभु। 42

72. नौका तुम बिन पार न होवे। 42

73. चलने की सामर्थ न मुझमें। 43

74. हरि बोलो हरि हरि ही बोलो। 43

75. हरि भज लो शाश्वत वह ही है। 44

76. जीवन एक पहेली माना। 44

77. आ गये हम शरण तेरी। 45

78. मन मेरे क्यों है उदास। 45

79. हरि भज हरि भज मन तू हरि भज। 46

80. हरि भजन करो मन सुख पाओ। 46

81. निहारती सूनी आंखें। 47

82. बने बन जा तू उपासक। 47

83. गान दिये जा इस जीवन को। 48

84. बीत रहे दिन रोवे अँखियाँ। 48

85. इस दुनिया का तू रखवाला। 49

86. हरि तेरे हम द्वारे आये। 49

87. जायें कहाँ तुम ही कहो। 5088. जग के पालक तुम हो सर्जक। 50

89. राम के संग है बहारें। 51

90. शरण तेरी मैं मुरारी। 51

91. मन हरि जपो वही सुखनन्दन। 52

92. तुम बिन ज्ञान कहाँ से लाऊँ। 52

93. दर दर डोलूँ खोज रहा हूँ। 53

94. थोड़ा सा जीवन यह। 53

95. मन हरि जपो प्रीति हरि कर लो। 54

96. प्रभु बालक हम तुम्हारे 54

97. मन हरि भजो भजन सुखदाई। 55

98. हरि मैं हार गया ना आये। 55

99. हरि ओम मन जपो तुम। 56

100. हरि मै तेरी बाट निहारूँ। 56

101. कौन सी मैं गली खोजूँ। 57

102. मीत जहाँ मेरे उड़ चल मन। 57

103. हरि मैं चरण तुम्हारे पड़ता। 58

104. तुम बिन नौका पार न होवे। 58

105. मन हरि जप इसमें लय हो जा। 59

106. हरि हरि जपूँ सभी कुछ तेरा। 59

107. चल कर आऊँ तेरे द्वारे। 60

108. हरि बिन कृपा नहीं कुछ होई। 60

109. हरि अपने चरणों में रख लो। 61

110. निशदिन बरसत नयन हमारे। 61

111. हरि हरि कहते बीते जीवन। 62

112. तुझ मन्दिर में दीप जलाऊँ। 62

113. पिया मिलन की आस जगी है। 63

114. हरि शरणा मैं तेरी आऊँ। 63

115. ओम कहो मन ओम कहो मन। 64

1ए

हरि ओम जपो मन चैन यहाँ, बिगड़े सब बनते काम यहाँ। कितना दौड़े पागल तू मन, न तृप्त हुआ है कोई यहाँ। मन वही सहारा जप उसको, अन्तस की ज्योति जलाये वह। कितना ही भटको स्वप्निल जग, हरि ज्ञान मिले सुख पाये वह।

बहता जा पागल दरिया में, ना भूल इशारे सब उसके। अपना क्या सब मर्जी उसकी, चरणों में नीर चढ़ा उसके। मन मन्दिर सजा हरी मूरति, जग में ना होवे िर दुर्गति। दो दिन का मेला सारा यह, हरि ओम् जपो कर ले सद्‌गति।

हरि ओम् जपो मन सुखदाई, सन्तोष बढ़े जिय हर्षाई। सांसों में उसका सुमरन हो, ीके जग वैभव पड़ जाई। सोवे हरि में जागे हरि में, सब ओर नजारा उसका हो। यादों में नीर बहे जो मन, प्यारे लगते गंगा जल हो।

कर विनय यही मन प्रीति बढ़े, नयना छलके बस यादो में। पलभर भी कभी नहीं भूले, हरि ही आये बस सुपनों में। यादें उसकी प्यारी लागे, इन नयनों से अमृत टपके। यह ूल खिलावें पग पग पर, मन नहीं कही िर तू भटके।

2ए

हरि बोलो हरि हरि ही बोलो, अंखियाँ रोवे हरि ही बोलो। हरि बिन पार लगे ना नौका, समझ सोंच मन हरि को जी लो। चल चल हार गये क्या पाया, पल पल में मनुआ अकुलाया। पायें खोये क्या इस जग में, इस मन ने हमको तड़ाया।

लाज राखो दास तुम्हारा, बहती इन नयनों से धारा। पथ ना दीखे नाथ अबल हम, समझे ना दिल तुझे पुकारा। घूम रहा है इस जंगल में, पेट भरे ना देखे सुपने। किसको अपने गले लगाऊँ, कहने को सब ही है अपने।

*पीड़ा अपनी किसे सुनाऊँ, घुट घुट कर क्या मैं रह जाऊँ। जीवन दाता तुम ही पालक, नयनों के यह अश्रु चढ़ाऊँ। कुछ ना जानूँ तुझे पुकारूँ, मत रूठो तुम प्यारे छलिया। तड़ रही जीवन की धारा, पथ दे पाऊँ तेरा सैंया।*3ए

दिल उदास यह गाना चाहे, टूटी वीणा कैसे गाये? चाहूँ तेरा हाथ पकड़ना, पल पल में तू हमें रूलाये। चल चल गिरूँ न तुमको पाऊँ, कैसे इस मन को समझाऊँ। अगम अगोचर पार न तेरा, कैसे अपना प्यार जताऊँ।

लीलाधार कैसी है लीला, तूने इतनी भर दी पीड़ा। सूखे नहीं आँख का आंसू, ऐसी भी क्या तेरी क्रीड़ा। जग में घूमूं बना बाबरा, आस जगी ना मिले सांवरा। कैसे मैं दिल को समझाऊँ, सब कुछ तेरा मैं भी तेरा।

बहने दे नयनों की गंगा, इसे रोक ना मन हो चंगा। बह जाऊँ बस मैं इसमें ही, यह पवित्र पावन है गंगा। ताप हरे सब ले ले पीड़ा, तुम बिन हरि जग में क्या जीना। बहते आंसू कभी रूके ना, करूँ विनय इतनी तो सुनना।

4ए

हरि मैं गीत तुम्हारे गाऊँ, जाता जीवन नीर चढ़ाऊँ। सुख दुख का तू खेल खिलाये, लीला तेरी समझ न पाऊँ। बने हुए हम यहाँ अनाड़ी, तुम्ही हो दाता हम भिखारी। चक्र घूमता जनम मरण का, दे दो ज्ञान नाथ मैं हारी।

नयना रोवें समझ न पावें, नये नये नित सुपन सजावें। पीड़ उबलती छिपी तुझी में, समझ नहीं पर क्यों ना पावे। इस जीवन के खेल निराले, तपे धारा पड़ते है छाले। दिल को आवे हाय न चैना, कैसे समझूँ मैं मतवाले।

कण कण में तू छिपा हुआ है, मनुआ रोवे कहाँ गया है। बन अज्ञानी घूम रहे हैं, नयन नीर ना सूख रहे हैं। प्यार मिले खिल जावे बगिया, मुझसे रूठ नहीं तू छलिया। बालक तेरा रूप तुम्हारा, पार न होता दुख का दरिया। 5ए

दिल नहीं लगता हमारा, इस दुनिया से मैं हारा। निज चरण में जगह दे दो, बहती नयनों से धारा। पथ पता न तुमको पाऊँ, आँख रोवे अब छिपो ना। शरण में प्रभु राख लो तुम, दिल गया भर अब सुनो ना।

पाप क्या है, पुण्य क्या है, कर्म की जानूँ न रेखा। मैं अबल हूँ जानता यह, तम घना है कुछ न दीखा। नीर को स्वीकार कर लो, दास को तुम राह दे दो। तड़ते जो प्राण मेरे, ईश अपना प्यार दे दो।

तेरे बिन खिले न बगिया, क्यों हमें तड़ा रहे हो। दुख के दरिया में हरि तुम, लाज मेरी राखते हो। नैन ना मुझसे चुराओ, आशा इस दिल में आओ। सुप्त वीणा को जगाओ, मेरे स्वर में तुम छाओ।

6ए

जी नहीं लगता हमारा, झुलस रहा तन यह सारा। मन ना समझे यह पागल, ज्ञान भी कैसा हमारा। पाई न मंजिल भटकते, किसे कहें मेरी सुनते। नयन से पानी बरसता, क्यों नहीं ेिर भी पिघलते।

खेलना दो दिन यहाँ पर, कठिन है यह मार्ग दूभर। दिल लगाते ेिर रहे हैं, न लगे, तू क्यों है निष्ठुर। प्यार के दो गीत सुनते, तुम बिना हम तो तड़ते। तू लगा दे आग ऐसी, ना रहे क्यों हाय जीते।

मन उड़े जाये कहाँ पर, ना निशा गम का जहाँ हो। न जले आशा की होली, प्यार का झरना वहाँ हो। मन न माने हरि सुनो तुम, पड़ता मैं तेरे पैंया। अबल हम कुछ जानते ना, दे दो तुम अपनी छैंया।7ए

काटे कटती ना यह रैना, कैसे कह पाऊँ मैं बयना। पता नही घर तेरा मुझको, नीर गिरावें हरि यह नयना। जपूँ तुझे मैं ढूंढू हरपल, न छिप बजा दो तुम बांसुरिया। करूणा के सागर कहलाते, आवे मेरा भर भर जीया।

;षि मुनि तुमको जपते रहते, चल चल कर हम तो हरि गिरते। थाम हमें लो हार गये हम, चरणों में तेरे हम पड़ते। सब ओर इशारा तेरा है, मुँह ेर न जीवन तेरा है। कठपुतली बन कर नाच रहे, क्या दोष बता दे मेरा है।

सुमरन तेरा प्यारा लागे, सुपनों में आवे दिल चाहे। पलभर भी सुरति नहीं टूटे, विनती सुन लो हरि यह चाहे। जीवन की मेरी आशा है, सांसे तेरे गुन गाती है। तुम ही तो नाथ रखैया हो, डगमग यह किस्ती होती है।

8ए

छिप कहाँ गये तुम सांवरियां, तड़े जियरा लागे ना दिल। कैसे तुमको नाथ मनाऊँ, नयन गिरायें हरपल यह जल। आयेगा कब तू सांवरियां, प्रीति निभा दे तुझे पुकारूँ। बजे बांसुरी नाचूं छम छम, तेरी निशदिन राह निहारूँ।

तुम बिन जीवन ीका लागे, मुझे डरावे यहाँ निराशा। मेरे जीवन की तू आशा, कैसे खोजूँ बना तमाशा। जीवन मेरा तुही चलावे, नयना ेिर भी भर भर आवे। अज्ञानी हम हार गये हैं, कृपा मिले तो ही पथ पावें।

हरि हरि कहते बीते जीवन, दिल में बाजे बस तेरी धुन। जीवन थोड़ा कुछ पल बाकी, ना तड़ाओ अब तो ले सुन। पार लगा दो मेरी किस्ती, बन कर खेवट ओ सांवरिया। अकुलाते इस जीवन को तू, विनय करूँ तू दे दे छैयां। 9ए

तेरे नाथ खिलौने है हम, तड़ाओ ना प्यार हमे दे। जीवन की इस पगडण्डी पर, नाथ अबल हम साथ सदा दे। कहाँ पुकारे छिपे कहाँ हो, मेरी यादों में तुम ही हो। तड़े जियरा यह तेरे बिन, दुख भंजक तुम कहलाते हो।

मेरा बालम मुझसे रूठा, बना हुआ है क्यों हरजाई। आशायें लेती अंगड़ाई, बजी कभी न पर शहनाई। देना सदा कृपा अपनी प्रभु, अज्ञानी हैं नाथ अबल हम। उजियारा कर देना पथ में, बहुत यहाँ फैला है प्रभु तम।

आँख निहारें पथ तेरा यह, विछुड़े क्यों जीवन है तेरा। पार लगा दो नैया मेरी, कर्मों के बन्धान ने घेरा। प्यार बरसता रहे तुम्हारा, हरि हरि जपते सदा रहे हम। जब तक मेरा है यह जीवन, नहीं कभी भूलें तुमको हम।

10ए

ना शान्ति मिली जीता हारा, मन मेरा लगता कहीं नहीं। मन घूम रहा कुंठाओं में, प्यासे को जल तू पिला मही। जब बहें नयन से आंसू यह, दे कौन दिलासा सोंच तुही। मर्जी से सब होता तेरी, बिन कृपा मिले ना चैन कहीं।

हरि जपे मिले मन को चैना, वर दे रोवे मेरे नयना। तू आदि सत्य है अन्त सत्य, क्यों बना हुआ इस पल रोना। चरणों में तेरे नाथ पड़े, कुछ ना जाने रोवें आंखियाँ। प्रभु हाथ पकड़ लो तुम मेरा, दुख की मिट जावे फिर घड़ियाँ।

*मैं को भूलें प्रभु कटे फर, सांसो में धुन तेरी गूंजे। तेरे मन्दिर में बैठ यहाँ, कण कण मेरा तुमको पूजे। ना मुझे भुलावा प्रभु अब दो, खोलो आंखे ढूँढू तुमको। जब जब भी मेरे नीर बहें, प्रभु सदा समर्पित हो तुमको।*11ए

पागल मन बहला ले अपना, सारा जग है बस इक सुपना। लहरें यह पकड़ नहीं आवे, बहता जा नियति यही बहना। सासों की सरगम क्या गाये, इनको देखो मन बहलाये। बैचेन हृदय को अमी मिले, सुख दुख सारे फिर मिट जाये।

पाने खोने का खेल यहाँ, मनुआ भटके ना चैन यहाँ। हरि प्रीति बिना ना शान्ति मिले, तड़पो कितना पर चैन वहाँ। नयनों में नीर मचलते जब, करते किस ओर इशारा है। खेलो तुम कितना खेल यहाँ, कठपुतली उसकी नाचें है।

उठती गिरती आशा रहती, ना खेल रूके हमको ठगती। ना बने दिवाने हम हरि के, जीवन नदिया बहती जाती। हरि भज हरि में मन प्राण भिगो, कट जायेंगे सारे बंधान। हरि कृपा बिना ना मुक्ति मिले, कितना ही तू कर ले क्रन्दन।

12ए

यह बहाते नयन पानी, ढूंढते तुझे हैं माली। फूल तेरे बाग के हम, नहीं मिटती नयन लाली। आ रही यह सांस प्रभु क्यों, तुम बिना जियरा तड़पता। चलता खाता हूँ ठोकर, प्यार पाने को भटकता।

छिप गये हो किस जगह पर, प्राण हरपल तुझे टेरे। अज्ञानी न जानता कुछ, झुकता चरणों में तेरे। मैं अबल हूँ जगत स्वामी, देख लो नजरें उठा कर। चाहूँ तुझ पग को धोना, गिर रहे जो नीर झर झर।

*उलझा कर्मों के बन्धान, जानूं न कैसे कटेंगे? चाहता तेरी कृपा को, कृपा से ही हम तरेंगे। प्रतीक्षा करता तुम्हारी, प्रभु उबारो तम घना है। ज्ञान का दीपक जला दो, शीश चरणों में झुका है।*13ए

हरि से प्रीति बढ़ा ना पाया, उलझ गिरूँ मैं फिर चिल्लाऊँ। पागल मन मेरी माने ना, कैसे मैं इसको समझाऊँ। मेरे नयन बहाते पानी, लाज राखना अन्तर्यामी। दास तुम्हारा जनम जनम का, सकल सृष्टि के तुम हो स्वामी। जीवन दाता जीव तुम्हारा, दर दर भटक रहा यह हारा। ज्ञानदीप को नाथ जला दो, मिट जाये सारा अंधियारा।

टूटी आशायें ले फिरता, बोलो इनसे क्या है रिस्ता? थक कर आये द्वार तुम्हारे, नयनों में है नीर मचलता। मृगमरीचिका यहाँ सताये, बना भिखारी दर दर डोलूँ। प्रीति बढ़े तुमसे हरि हरपल, करो कृपा यह नयना खोलूँ। हरि हरि कहते बीते जीवन, तुम ही हो इस जीवन के धान। मेरे नयनों में बस जाओ, पांव पडू. तुम हो सुखनन्दन।

14ण

मन खोज रहा, मन भटक रहा, क्या पाने को है तरस रहा? मन लगे नहीं इस जंगल में, ना दीखे गलियाँ तड़ रहा। आये कहाँ से जाने नहीं, मंजिल क्या समझ नहीं पाये। अपनी अपनी परिभाषा कर, सब ही इस दिल को समझाये।

बन यहाँ अजनबी घूम रहे, ना मिटती नयना लाली है। आंसू बहते हरि को दे दे, अज्ञात राह यह सारी है। मत रो मन कैसे समझाऊँ, तू जहाँ वही तेरा है घर। ले जाता बह मर्जी उसकी, बह ले बस तू तो एक लहर।

बैचेन हुआ मन क्यों डोले, कठपुतली तू बस नाच रहा। पर समझ नहीं इसके आये, ना मिले किनारा ढूंढ रहा। निज को हरि के अर्पण कर तू, ना और किनारा कोई है। बह देख हो रहा जो जग में, ना तुझसे पूछे कोई है।

सब लिये वासनायें अपनी, इस जग में घूम रहे पगले। क्या करे शिकायत पागल तू, जो यहाँ मिले पल तू जी ले। क्या गया यहाँ क्या आयेगा, झिलमिल सुपनों की यह दुनिया। हरि बिन नैया ना पार लगे, तू बसा नयन में वही पिया।जाने। निज शीश चरण में रख उसके, तप यही सदा उसकी माने। ना सुरति हरी तुमसे खोये, हरि विनय यही यह अमी पिला। सुख दुख मन जो भी तुझे मिले, किस्मत अपनी ना करो गिला।

15ण

व्याकूल मन मेरा किसे कहूँ, बरसे ना सावन किसे कहूँ? मरूस्थल सा मेरा जीवन, कोयल गाये ना किसे कहूँ? आँखे खोलो हम नाथ अबल, चल पायेगे ना कृपा चहूँ। तुम दीनबन्धु सुख के सागर, प्यासा हूँ जल को नाथ चहूँ।

प्रभु पार लगा दो यह नौका, मैं चरण तुम्हारे हरि चहूँ। हरि मा़ मुझे तुम कर देना, बोलो तुम बिन मैं किसे कहूँ? दिल मेरा भर भर आता है, कुछ नजर नहीं मुझको आता। स्वर उठा नहीं पाती वीणा, बोलो जोडू. कैसे नाता।

पूजा की थाली पास न कुछ, आंसू गिरते मेरे टप टप। तुम और न तड़ाओ मोहन, गिरता जाता हूँ ना अब छिप। जग के रखवाले पालक तुम, आँखे ना ेरो बालक हम। पीड़ा को किसे दिखाये हम, सिसकी पर सिसकी लेते हम।

तुम रास रचाओ हम आयें, जीवन को मतलब दे पायें। यह नाथ नहीं मेरे बस में, नयनों में चाहूँ बस जाये। प्रभु पड़ा द्वार पर तेरे मैं, चाहें ठुकराओ प्यार करो। बीती जाती है यह संधया, मैं चरण पडू. तुम क्षमा करो।

16ण

जीवन में दर्द छिपा इतना, स्वर रोयें तुम न पास मेरे। तड़ा मैं बहुत तुझे खोकर, कैसे पाऊँ न हाथ मेरे। मैं अबल दयालु नाथ हो तुम, ना रिझा तुझे मैं पाऊँ क्यों? तुम लाज राखना सेवक की, तुम हो रक्षक मैं रोऊँ क्यों?

जीवन दाता जीवन तेरा, मैं हारा भटका यहाँ बहुत। टप टप गिरते आंसू खोजें, मिल जाओ तुम दिल ले राहत। न दीखे मुझको कोई डगर, ले लो तुम मेरी नाथ खबर। मैं पांव तुम्हारे हूँ पड़ता, अनजान डगर जाऊँ किधार।लहरे बहती बहती जाती, रूक सकें नहीं पर इठलाती। अन्तस में सागर रूप छिपा, जुड़ कर उससे न दुख पाती। करता मैं पूजा हाथ जोड़, विधि से मैं हूँ सारा वंचित। तुम हाथ कृपा का प्रभु रख दो, मुरझाई बगिया हो सिंचित।

17ण

थके यहाँ चलते चलते, ना पता कहाँ जायेंगे? बह रहे हमारे आंसू, खो शून्य में जायेंगे। िरते सहारे खोजते, छूटते सब ही किनारे। व्यथित दिल समझे नहीं यह, बह रहे हैं अश्रु खारे।

डगमगाती जिन्दगी यह, मन्जिल क्या है नहीं पता। पागल बने क्या खोज है, प्रभु मफ कर देना खता। ना शिकायत हो कभी भी , प्रभु भटकते हम फिरें। देख लो नजरें उठाकर, बह रहे है अश्रु मेरे।

सब सहारे छूटते हैं, खेल कुछ पल का यहाँ है। नयन का पानी न सूखे, देखते लुटता जहाँ है। खेल खेले जिन्दगी यह, व्यथित होकर यहाँ रोई। प्यार से तुम देख लो प्रभु, और न चाहत है कोई।

18ए

मन नाचे तेरे संग बालम, तू साज बजा दे मैं पागल। जनम फल हो जाये मेरा, प्यासा मैं तू तो है बादल। गया हार ना चैन मिला प्रभु, सूना मेरा संसार हुआ। अंखियों ने की रिमझिम बारिस, यह दिल मेरा बेहाल हुआ।

तेरा बालक मैं विनय करूँ, जियरा मेरा करता धाक धाक। तुम बिन जाऊँ मैं कहाँ कहो, पथ दो पहुँचू तुझ चरणो तक। अगम अगोचर पार न तेरा, अन्धाकार ने मुझको घेरा। दीप जला दो मेरे मोहन, तम मिट जाये होय सबेरा।

जियरा हरपल तुझे पुकारे, तुम बिन खिले नहीं मतवाले। तेरे इंगित पर सब नाचें, ढूंढू तुझे पांव में छाले। बहा जा रहा लाज राखना, मेरा तो बस तुही आसरा। सुरति कभी ना छूटे तुमसे, लय हो कण कण तू ही प्यारा।19ए

तेरा जीवन तू मालिक, व्यथित दिल दे दे सहारा। दिल नहीं लगता हमारा, क्या करूँ किस्मत से हारा। फूल कितने ही खिले हैं, पर यहाँ हम तो जले हैं। फिर रहा प्यासा पिला जल, शरण में तेरी पड़े हैं।

ना हमें मिलता किनारा, कह दो तुम कैसे जीयें? नयन में सुपने संजोये, टूटते जब हाय रोयें। कांपती नौका हमारी, छिप गया तू क्यों क्षितिज में। द्वार तेरे हम खड़े हैं, रोते हैं मेरे नगमें।

जाओ बस नयनों में मेरे, मिटें सब संकट के घेरे। रास तुमसे ही रचायें, प्राण यह तुमको पुकारे। तुम बिना जायें कहाँ पर, मिटता उजियारा कर दो। अर्चना स्वीकार कर लो, तड़ता दिल प्यार दे दो।

20ए

नियति के हम तो खिलौने, और तो हम कुछ नहीं हैं। पाल कर भ्रम हम भटकते, चैन ना मिलता कही हैं। डगर यह कैसी बनी है, राहें सभी अनजान है। विद्वता की पोटली ले, घूमते नहीं मुकाम है।

आज हैं हम कल नही हैं, देखते पल बीतते हैं। फूल कितने ही खिले पर, अब नहीं वह महकते है। सब बजा डली यहाँ पर, शून्य में खो जायेंगे। प्रीति कर मन शून्य से तू, शून्य से तर जायेंगे।

नाचता ब्रह्माण्ड सारा, शून्य का ही खेल सारा। उठ रहा सब गिर रहा है, पर नहीं यह शून्य हारा। आस मन किसकी करें तू, तैरे सागर में तिनका। जोर कितना जान ले तू, नाच बन सागर के मन का।21ए

हरि कृपा सदा चाहूँ तुमसे, नयना मेरे हरपल बरसें। खोजूँ मैं कहाँ तुझे मोहन, यह प्राण नहीं तुम बिन हरषे। चलते चलते ठोकर खाई, ना समझ सका जग हरजाई। दास तेरा हूँ कृपा करो, ठुकराओ नहीं मैं शरणाई।

तुम ही बोलो हम कहे किसे, सदियां बीती ना मिले मुझे। यह कंठ मेरा भर भर आता, जल पिला मुझे जो प्यास बुझे। कुछ ना दीखे मैं तो हारा, पल पल मुझको लगता भारी। कर दो उजियारा चरण पडू., यह रातें भी है अंधियारी।

थक थक कर बाट निहारूँ मैं, बीते सावन तुम ना आये। क्यों बने हुए तुम निर्मोही, प्राणों को हरपल तड़ाये। बस जाओ मेरे नयनों में, फिर मिटे जगत का तम सारा। दुख भूल जगत पाऊँ तुमको, मै ना कुछ सब कुछ है तेरा।

22ए

राम निज की शरण में लो, देख लो तुम रो रहे हैं। ना निकल पायें भंवर से, कृपा तेरी चाहते है। आस तेरी ही लगाऊँ, रूठे तुम कैसे मनाऊँ। नीर अंखियाँ यह बहावें, खोजता तुमको न पाऊँ।

चाहते कितनी बढ़ाई, ठोकरे चल चल कर खाई। नाम तेरा बस सहारा, संधया यह ढलती जाई। बीत जाये यह न घड़ियां, जोड़ों मोहन यह कड़ियाँ। द्वार तेरे बैठ कर ही, बीत जाये रैन सैंया।

आँखे बरसे यह रिमझिम, नाच रहा देखो सावन। तेरे बिन जिया न लगता, आस बाजे बांसुरी धुन। द्वार तेरे हम खड़े हैं, बहता नयनों से पानी। खाली झोली पुष्प सूखे, चाहता मैं प्यार दानी।

*देख लो बालक तुम्हारे, प्रभु अबल नादान हम है। बिन कृपा ना पार होवें, उठ रहे तूफान प्रभु है। जगत पालक तू नियन्ता, नाचता ब्रह्माण्ड सारा। बना पागल घूमता हूँ, दया करो मैं तो हारा।*23ए

तुमने रूलाया रोये यहाँ पर, आंसू बहते नयनों से झर झर। कोई शिकायत तुमसे नहीं है, मन यह माने ना छोड़े फिर। कैसे रीझे न जानूँ रिझाना, जायेगा बीत सारा फसाना। दिल यह जला पर तुझे न जलन हो, गाये हवाएँ मीठा तराना।

न अश्रु देखे न दिल को टटोला, किस्मत हमारी मुख से न बोला। ढलता है दिन आई यह संधया, दीखे न मुझको कोई उजाला। जलती यहाँ चाहतों की होली, किसके लिये आंख हमने खोली। कुछ तो हमें तू देता भुलावा, खुश हो कुछ पल तेरे संग जी ली।

तुम दिल की सुनते तुझे सुनाते, न अरमान मेरे घुट के मरते। खुशी में तेरी चले यह सांसे, सुनता नहीं तू किसको सुनाते। जाये उड़ा ले हवा का झोंका, बहे प्रीति गंगा हमें दे मौका। अज्ञानी हम हैं दास तुम्हारे, धारा शीश चरणा अरमां दिल का।

24ए

बीत गये दिन तुम ना आये, प्यासा कंठ न प्यास बुझाये। करवट रैन बदलते बीते, अंखियाँ झरझर नीर बहाये। दर तेरे का मैं हूँ जोगी, भिक्षा दे दो अंखियाँ रोती। तुम बिन मेरा नहीं सहारा, अंधियारा जला दे ज्योति।

नयना रिमझिम रिमझिम बरसे, आस तुम्हारी कब तू आवे। चल चल थका न पाया तुमको, कैसे दिल को चैना आवे। जियरा रोये तुझे बुलावे, तुम बिन बगिया यह मुरझावे। अगम अगोचर पार न तेरा, जियरा चाहे प्रीति बढ़ावे।

आओ मोहन तुझे पुकारूँ, सुन बन्शी धुन नाचूं गाऊँ। बचे हुए कुछ जो जीवन पल, तुझ गंगा में बह सुख पाऊँ। नमन करो स्वीकार हमारा, कभी न भूलो दास तुम्हारा। नयना जल से तुझ पग धोऊँ, वर दो प्रियतम मिले हमारा।

25ए

हरि तुम राखो लाज हमारी, दिशा हमे दो पथ है भारी। तुम बिन रोयें मेरी अंखियाँ, किसे कहूँ मैं तुम पर बारी। मात पिता गुरू तुझे कहूँ सब, फिर भी मुझसे क्यों जाते छिप। तुम बिन सूना यह जग लागे, पाऊँ तुमको रहो नहीं चुप।

गलियां सूनी बजे न पायल, दिल भी मेरा प्रभु जी घायल। फसी बीच में नाव हमारी, आ जा खे दे नैया साहिल। तुम बिन होय उजाला ना छिप, मेरे जीवन का रखवाला। काली रातें, मुझे डरावें, पिला अमी का मुझको प्याला।

तड़पे जियरा सुधि क्यों ना ली, दास तुम्हारा अंखियाँ गीली। कैसे तुमको नाथ मनाऊँ, जग में आँख तुही ने खोली। पांव पडू. अब और सता ना, जिय न जला मैं तेरी चेरी। मिटे तपस तुम अब तो बरसो, करूँ विनय कठपुतली तेरी।

26ण

मन काहे तू नयन बहाये, गगन छिपा वह तरस न खाये। जीवन सुपना बहता जाये, किसकी पागल आस लगाये। मन को तो समझाना होगा, चोट लगेगी सहना होगा। किसको अपने नीर दिखाये, विष को भी हँस पीना होगा।

हरि की लीला हरि ही जाने, कुछ अपने बस ना क्यों रोवे? छिपा हुआ छिप जाने भी दे, शान्ति छिपी यादें ले सोवे। सुरति लगा मन यहाँ हम अबल, कठपुतली बन नाचें उसकी। कुछ पल का खेला है जग में, जप उसको चलती है उसकी।

*मन ना माने रोवे मनुआ, कैसे बीतेगा यह सुपना। जग के कंट लगे दुख पावे, पिव पिव रटे न आवे सजना। विरहाग्नि हरि की जब जलती, ीकी जग दौलत तब पड़ती। सांस सांस तब उसे पुकारे, मन जप ले अब संध्या ढलती।*27ण

सदा जपें ना तोड़ो बन्धान, तेरे बिन जग में बस क्रन्दन। सुख दुख सबका तू मालिक है, पीड़ा हर लो संकट मोचन। अपने अपने दावे सबके, बहो हरि ले जाये जहाँ तू। दिल में उसका दीप जला मन, जाने नहीं कहाँ जाये तू।

अंखियाँ नीर बहाती हरपल, सही न जाती मुझसे पीड़ा। जीवनदाता तेरी लीला, समझ न पावें तेरी क्रीड़ा। चल चल गिरें अबल है हम तो, नाथ थाम लो मेरी बैंया। अगम अगोचर पार न तेरा, नीर बहावें मेरी अंखियां।

व्याकुल मनुआ खोजे तुमको, तुम बिन रस ना आवे हमको। जल बिन तड़पे मछली जैसे, तड़पू चाह न भूलूँ तुमको। प्रीति बेल नित बढ़ती जाये, सदा लड़ें तुमसे ही नयना। हरि हरि मेरे प्राण पुकारे, हरि तुमसे मेरा यह कहना।

28ण

देख ले नजरें उठा कर, अबल हम तुम सबल हो। गीत मेरे रो रहे हैं, पूछते क्यों मौन हो? नयन यह रिमझिम बरसते, तू छिपा बैठा कहाँ? किसको कहते दिल की हम, कौन सुनने को यहाँ?

आग दिल में जल रही है, देखते आया नहीं। बना पागल मैं भटकता, क्या बता किस्मत यही? थक गये पर आस तेरी, जानो तेरी चेरी। घूमते अनजान गलियाँ, क्यों रूठे नज़र ेरी।

*न बजी पैरों में पायल, तू न पिघला हाय क्यों? प्यासा हूँ बनो रहमदिल, नहीं बीते शाम यों। द्वार तेरे हम पड़े हैं, लाज तुम ही राखना। तुमको दिखलाऊँ यह दिल, नाथ इसमें झांकना।*29ण

बरस बरस कर आँखे सूखी, नहीं सहारा कोई पाया। व्याकुल मनुआ तुझे पुकारे, गई हार मेरी यह काया। तुझे बुलाऊँ तुमको ढूंढू, चलूँ यहाँ मैं गिर गिर जाऊँ। दीनबन्धु करूणा के सागर, कृपा होय तो ही मैं पाऊँ।

जीवन दाता तुम्ही सहारे, निर्बल को बल देने बाले। इन आंखों में आंसू आये, लाज राखना ओ मतबाले। चल चल हारे नाथ गिरे हम, देख हमें लो ना अब है दम। थामो प्रभु यह बहिंया मेरी, तुम बिन मिटे नहीं मेरे गम।

बस जाओ मेरे नयनन में, जग के दन्श नहीं फिर खटके। मुरझाई बगिया खिल जाये, रचा रास नाचूँ जी भर के। सावन सी अंखियां यह बरसे, प्रीति बेल नित बढ़ती जाये। पी तेरा प्याला सब भूलूँ, चाहूँ तू ना कभी भुलाये।

30ण

हरि हरि मेरे प्राण पुकारें, इस जीवन को देने वाले। कृपा तुम्हारी जब मिल जाती, मिट जाते सब दिल के छाले। इस जीवन की तू ही आशा, चैन न आये कर ना झगड़ा। डरपे जियरा तू क्यों विछुड़ा, जाम पिला दे हरषे जिवड़ा।

जीवन दाता जीवन तेरा, अन्धाकार ने मुझको घेरा। सांस सांस यह तुझे उचारे, दूर करो तम होय सुबेरा। जनम जनम से दास तुम्हारा, चाहूँ यही बनूँ मैं प्यारा। लाज राखना हे हरि मेरी, मेरे जीवन का आधारा।

इन नयनों में तुम बस जाओ, बरसें अंखियाँ कभी न जाओ। शीश धारूँ मैं चरण तुम्हारे, सुनूँ बांसुरी प्रीति बढ़ाओ। प्यार तुम्हारा जब मिल जाये, सूखी बगिया फिर खिल जाये। तपस मिटे जीवन की सारी, बरसे मेघ धारा लहराये।

31ए

कितने नीर बहा ले रो ले, हरि बिन भजन न जीवन सुलझे। कितने धोखे मिले यहाँ पर, पागल मन फिर भी ना समझें। सत्य वही सब खेल उसी आवे। उर में दीप जले डर भागे, क्यों ना हरि को हिय बिठावे।

आनी जानी इस दुनिया में, बहो लहर बन दुख ना मानो। हरि हरि जपो सहज हो रस्ता, सत्य यही मानो ना मानो। सोये स्वर भी उठ जाते है, जिसने हरि से प्रीति बढ़ाई, दुख से टूटे फिर नाता है।

देख यहाँ ले कितने सुपने, हरि बिन चैन न आवे पगले। आदि अन्त वह सदा सत्य, धयान उसी का कर तू बह ले। हरि हरि बोलो उसे बुलाओ, घोलो। छूट रहे सब कूल यहाँ पर, हरि में अपने प्राण भिगो लो।

32ए

बने हुए तुम अन्तर्यामी, कैसे दूर करूँ बैचेनी। सब कुछ जानो घट की तुम, बहा रही अंखियाँ यह पानी। खोजन चला न तुमको खोजा, कौन प्रभु हम तेरे सहारे, मिले चरण रज दे दे मौका।

नैया मेरी डगमग डोले, उठते है तूफान डरायें। दीन बन्धु करूणा के सागर, चाह प्यार तेरा मिल जाये। आंखों से गंगा बहती है, सांस सांस सुमरन जाऊँ, विरह आग क्यों न लगती है।

जीवन दाता जीवन तेरा, तू ही मेरा भाग्य विधाता। तुझ बिन बता कहूँ मैं किससे, इन आंखों में पानी आता। पड़े कर्म के जाल घूमते, कैसे नि जगत है सुपना, दर्द लिये हम यहाँ घूमते।

कर्ता नहीं बने हैं कर्ता, दुख की गठरी लेकर चलते। तुम हर लो अज्ञान हमारा, प्रभु हम तेरे चरणा पड़ते।

33ए

डोल रही है मेरी नैया, ले चल मेरे नाविक मुझको। शरण तुम्हारी आन पड़े हैं, खे दे इसे न दीखे मुझको। दीन बन्धु करूणा के सागर, डूबी जाती मेरी गागर। तेरा ही बस नाथ सहारा, अंखियां मेरी बरसे झरझर।

नाच रहा ब्रह्माण्ड यह सारा, अगम अगोचर पार न तेरा। अबल मैं हूँ जाऊँ कहाँ पर, तेरे बिना न कोई मेरा। दर दर डोलू खोजूँ तुमको, इन नयनों में आँसू लाऊँ। कहाँ छिप गये मेरे मोहन, बतला मन कैसे समझाऊँ।

तुझे पुकारूँ जीवन दाता, तू ही पिता और तू माता। कूल यहाँ सब छूट रहे हैं, विनय हमारी सुनो विधाता। धयान तुम्हारा बढ़ता जाये, सारे स्वर तुझमें खो जाये। कण कण होवे तुझें समर्पित, धान्य हमारा जीवन होवे।

34ए

दुनिया में ना कोई जाने, कौन यहाँ कब वह खो जाये। कितने नीर बहा देखे क्या, हरि सुमरन बिन चैन न आये। उसका एक नाम है सांचा, जपता चल हरि को ना भूलो। जग के जंगल में नहीं भटको, उसको सुमरो अमृत पी लो।

किसको ुरसत ले तेरी सुधा, दो पल का है रैन बसेरा। हरि बिन पार न होवे नौका, कहाँ लगे ना जाने डेरा। मत रो पागल समझा ले मन, चोंच दई वह चुग्गा देगा। मर्जी उसकी आना जाना, कर्ता बना तभी तड़ेगा।

याद उसे कर मन तब नाचे, दिल की पायल छम छम नाचे। मीरा भी जब हुई दिवानी, छोड़ा सब दीखा हरि सांचे। हरि के चरणों में सिर रख दे, नीर बहेंगे तेरे झर झर। इस नदिया में यहाँ बहा जो, ले जाती धारा अपने घर।35ए

थक चुके हम हार कर अब, आये तेरे दर माली। वासनाओं से जले हम, न मिटी नयनों की लाली। चाह मन्दिर में जगह दो, जायेगा कट स़र सारा। जियरा रोता यह तुम बिन, इस जीवन के आधारा।

नीर बहते देख लो तुम, आस तेरी कर रहे है। डूबे नैया सम्भालो, खेवट मेरा तू ही है। प्रीति का प्याला पिला दो, दूर कर ना अब सजा दो। मैं भटकता ही रहा हूँ, निज चरण में प्रभु जगह दो।

गीत तेरे ही उठें प्रभु, नित प्यास तुझमें ही बढ़े। वासनायें मिटें जग की, प्रभु नयन तुमसे ही लड़े। नयन में तू ही समाये, हम वांसुरी तेरी सुने। दन्श सारे भूल कर प्रभु, नाथ तुमको ही चुने।

36ए

चले न पहुँचे, रहे भटकते, जीवन की है संधया आई। द्वार खड़े हम हाथ जोड़कर, राख हमें अपनी शरणाई। तेरी लीला नहीं जानता, मनुआ रोये तुझे पुकारे। दीन बन्धु तुम सुख के दाता, ना रूठो यह प्राण पुकारें।

अज्ञानी बालक है हम तो, ज्ञान धयान की विधि ना जाने। ि़र भी करते तेरी पूजा, आंसू की यह कथा बखाने। नौका पार लगा दे मेरी, डोल रही है बीच भंवर में। कर्मों के बन्धान में बंधाकर, निकल सकूँ ना बिना कृपा मैं।

प्रीति बढ़ाओ हरि तुम मुझसे, जपें तुम्हें जग छूटे हम से। सदा सताती रही वासना, बने विवश यह जियरा तरसे। मेरे नयनों में बस जाओ, दन्श जगत के भूलूँ सारे। बीतेगी यह रैना सारी, सांस सांस बस तुझे उचारे।

हरि तुम मेरी लाज राखना, अन्तर्यामी जग पालक हो। बहते इन आँसू को देखो, नाथ तुम्ही तो दुखभंजक हो। मेरे मांझी भूल मुझे ना, चरण पड़ू. तेरा सेवक मैं। ताप मिटाना मेरे स्वामी, ज्ञान मिले पाऊँ तुमको मैं।37ए

जीने को जी रहे यहाँ हम, तेरी कृपा बिन न चैन यहाँ। अबल नाथ मैं बालक तेरा, जिय खिले सुमन दो प्यार यहाँ। आँखो से आंसू गिरते हैं, पथ तेरा हरपल तकते हैं। दीनबन्धु करूणा के सागर, सुमरण तेरा ही करते है।

डगमग करती मेरी नैया, पार लगा प्रभु इसको देना। ़ुल यहाँ हो जाये जीवन, आँख उठा कर तुम लख लेना। अन्तर्यामी जीवन दाता, कण कण तेरा ही गुण गाता। लाज राखना तुम हरि मेरी, जीवन तुमसे ही यह आता।

आंखों में मेरे आंसू हैं, कभी रुका ना होना हमसे। पूछ रहे तेरे पथ को यह, प्यार बढ़े प्रभु जीवन हरषे। तेरे मन्दिर के कोने में, जगह मिले कट जाये रैना। अज्ञानी हम कुछ ना जाने, शीश झुका यह सुन ले बयना।

38ए

बोलो क्या गुनाह मेरा, जलाओ प्रभु मेरा दिया। कहो किसको हम पुकारें, हे नाथ तुम मेरे पिया। तम घना है रैन काली, मैं भटकूँ मेरे माली। फूल तेरे बाग के हम, देखो आंखों की लाली।

नाचता ब्रह्माण्ड सारा, ले यहाँ तेरा सहारा। मेरा भर भर कंठ आता, खोज न पाता मैं हारा। दर्द छलके रोय नयना, कह सकूँ कुछ मै न बयना। बस तुम्हारा ही सहारा, बिन मिले ना आ आये रैना।

शीश चरणों में झुका है, मैं खोजता तुमको फिरूँ। नीर यह अँखियाँ गिरावे, मैं चल नहीं पाता गिरूँ। इंतजा नज़रों को तेरी, कठपुतली हम तो तेरी। अब सहा ना दर्द जाता, मैं शरण में नाथ तेरी।39

जायें कहाँ कुछ न दीखे, हरि इस अंधेरी रात में। छिप गये तुम भी मुरारी, छोड़ो नहीं मझधार में। ढूंढ़ते फिरते तुझे हैं, देख लो दिल यह तड़पता। न बनो निर्मोही इतने, क्यों नहीं प्रभु तू पिघलता।

ज्ञान का दीपक जला दो, पा सकूँ तुम वह डगर दो। नाथ अज्ञानी अबल मैं, चरण में अपने जगह दो। जगपालक, करूणा सागर, दिल मेरा करता धाक धाक। सदियां बीती ना आये, करो कृपा पहुँचे तुम तक।

खो न जाऊँ तुम बिना मैं, जाती यह संधया ढलती। थक गिरा तुमको पुकारूँ, आशा की होली जलती। देख लो आँसू हमारे, स्वर रहे रो पर पुकारें। लाज मेरी राख लो हरि, डूबे नैया हम हारे।

40

मत मान यहाँ मन में मन दुख, हरि यहाँ नचावे हम ना कुछ। खेला कुछ पल का सोंच समझ, चिन्ता इतनी अपना ना कुछ। हरि हाथों सौप न रो पागल, दुनिया सारी है इक जंगल। सब ही अपने सुख को रोते, क्यों बना हुआ है तू गाफिल।

जग के जब दन्श करें जख्मी, हरि धयान लगा मिटती पीड़ा। कटती इससे ही है चिन्ता, पल मिलें बजा हरि की वीणा। दुख के बादल जब छाते हैं, न कोई किनारा पाते है। अँखियां भी नीर गिराती हैं, यादें फिर किसकी आती है।

हरि सुमरण कर बस चैन वहाँ, धोखा जग मन न लिपट यहाँ। कुछ पल की सांसे उसको दे, जो आदि अन्त है सत्य यहाँ। बीतेगे पल मन यह सारे, हरि को सुमरे ना हारे है। कुछ तो सोंचो हम कौन यहाँ, उसके ही चले इशारे है।41

अँखियां देखें पथ को, संदेश क्या लाते है? दिन आते हैं जाते, हरि छिपे कहाँ पर है? बिन उनके सब सूना, जिय लगे न तुझ बिन रब। तेरी दुनिया प्यारी, फीका तुझ बिन सब रब।

उलझा ना जंगल में, मैं उलझ उलझ तड़पा। बस प्रीति बढ़े तेरी, ना होना नाथ रूका। जीवन तेरा हम क्या, बस हम तो कठपुतली। ना जान सके अब तक, देखो यह शाम ढली।

हरि कृपा सदा रखना, बालक हम अज्ञानी। करूणा का सागर है, तू देख नयन पानी। चरणों में शीश धारूँ, सब छोड़ तुझे ही वरूँ। मैं भटक भटक हारा, दो ज्ञान जतन मैं करूँ।

42

पिया न आये मेरी गली, यह तड़पे जिया मेरा सखी। सावन गया न कूकी कोयल, गिरें है आंसू मेरे सखी। बाट निहारूँ किसे पुकारूँ, घूमू इस जंगल में हारी। दूँ संदेश किसे ना जानूँ, कृपा करो अब श्याम मुरारी।

जल बिन मछली जैसे तड़पे, तुम बिन तड़पे ऐसे बालम। आँख उठा कर अब तो देखो, चला न जाता न मुझमे दम। जोगन भई पुकारूँ तुमको, कहाँ कहाँ सिर पटकूँ बालम। नयनों में तू ही तू साजन, जानूँ ना तेरा मैं आलम।

*धाक धाक मेरा जियरा धाड़के, वारिस इन नयनों से बरसे। नयनों में तैरे सुपने हैं, आ जा बालम जियरा हरषे। लागे सूना जग यह तुम बिन, घायल दिल है बजे न पायल। लाज राख लो हरि तुम मेरी, चरण पड़ू. तू ही है साहिल।*43ए

जीवन है जीना ही होगा, विष को पीकर हँसना होगा। बिखरे कांटे पग पग पर हैं, बचना इन से हमको होगा। तार बजा तू उस वीणा के, ना संगीत कभी कम होता। नीर गिरे हरि की यादों में, दिल का सुमन तभी है खिलता।

पी ले हरि के जाम यहाँ तू, अनहद हरदम बजता रहता। कांटे बनते ूल यहाँ, विष भी अमृत तब हो जाता। डर क्या सुपना चलता यह, नचा रहा हरि नाचे हैं हम। कठपुतली बन जा मन उसकी, नहीं रहे मैं िर क्या है गम।

पल पल परिवर्तित होता जग, जो कल थे वह आज कहाँ सब। मेला कुछ पल का ही है यह, शान्ति मिलेगी मन जप ले रब। वह आदि अन्त है सदा सत्य, ब्रह्माण्ड उसी का है सारा। मन धयान लगा हरदम उसका, सबका वह ही है आधाारा।

44ए

हरि नयन बसा इन अंखियों में, जीवन का वह ही है साहिल। दौड़े किसके पीछे पागल, सब ही होता जाता धाूमिल। अंधियारी रातों का साथी, अन्तस तेरे वह सदा बसे। वह धान्य सदा जो उसे जपें, जग दन्श नहीं िर उसे डसे।

जपता जा चलता जा जग में, न पता कहाँ खो जाये तू। न दर्द रहेगा सीने में, यादों में उसकी खोये तू। मन देख जगत सुपना है यह, पकड़े क्या हाथ नहीं आये। सब कूल छूटते जाते हैं, मन जग में क्यों तू भरमाये।

*कट जाते हैं सारे बन्धान, पागल मन क्यों करता क्रन्दन। मर्जी उसकी से बहना जब, मैं छोड़ मिले तुझको साजन। बिन उसके पार न हो नैया, इस गुलशन का वह ही माली। जग तृष्णा त्याग भजन कर मन, कट जायेगी रैना काली।*45ए

तुम करो कृपा गुलशन महके, कण कण में बसे नहीं दीखे। खोजूँ मैं तुझे कहाँ मोहन, अंखियाँ हरपल यह पथ देखे। हरि धयान तुम्हारा सदा रहे, मेरी अंखियों में बस जाओ। इस दिल में तुझे बसा लू मैं, यादों से पल भर ना जाओ।

चल गिरे यहाँ ठोकर खोई, क्यों भूल गया तू हरजाई। बल अपना ना सब कुछ तेरा, मैं नाथ तुम्हारा शरणाई। कितने जन्मों से खोज रहा, बहते आंसू ना मोल रहा। जग में ना इनकी कीमत है, किस पलड़े में तू तोल रहा।

आँसू ही आँसू पास मेरे, कुछ और ना हम दास तेरे। चरणों में सिर रख रोने दो, बह जाये सब अरमान मेरे। तेरी बगिया में खिले यहाँ, खोजे तुमको तू छिपा कहाँ। तू आदि सत्य है अन्त सत्य, यह जान नाथ हम मिटें यहाँ।

46ए

एक गम हो तो कहें हम, गम तो अनेकों है यहाँ। ढूढते हैं मुकाम को हम, गम का निशा न हो जहाँ। चल थके पाई न मन्जिल, नयन से गिरे मेरे जल। खोजता तुमको िरूँ मैं, ना मेरे पैरों में बल।

लाज तुम ही राखते हो, िर भी भूला मैं हारा। अश्रु को स्वीकार कर लो, प्रभु सेवक हूँ तुम्हारा। दीन बन्धाु दयालु तुम हो, जानता न तेरी लीला। मृगमरीचिका में ंसे न, वासना का जाल काला।

प्यार से तुमको पुकारूँ, पास कुछ न मेरे माली। तेरी बगिया खिलते हम, टूटी जाती है डाली। अश्रु का उपहार है बस, कुछ ना कीमत है माली। दर्द अपना रो रहा हूँ, भूलना ना रैन काली।

विश्व के तुम हो रचियता, नाचे हम ता ता थैयां। जाने न कैसे रिझाये, आस तेरी देख पीया। तेरे दर के हम भिखारी, मुँह न ेरो प्यार दे दो। नीर बहते नाथ लख लो, निज चरण में प्रभु जगह दो।

47ए

जग में रस मोहिं कुछ न आवे, निशदिन तेरा विरह जलावे। आन मिलो अब मुझसे रसिया, सहा न जावे दर्द सतावे। तुम बिन मेरी बजे न वीणा, नीर गिरावे हरपल अँखियाँ। इस जंगल में खोजूँ कहा मैं, बीती जाती है अब संधया।

विधि ना जानूँ मैं अज्ञानी, िर भी दिल से करता पूजा। अबल नाथ मैं बल ना मुझमें, स्वीकारो प्रभु मेरी पूजा। चल चल गिरता ठोकर खाऊँ, शूल लगे रस्ता है दूभर। नैया मेरी पार लगा दो, अंखियां नीर गिरावे झर झर।

दीनबन्धु करूणा के सागर, जिय यह रोवे गया तू किधार। तुम बिन सूखी मेरी बगिया, सूखे पत्ते उड़ते ार ार। दास बना लो अपना मुझको, जग तृष्णा ना मुझको घेरे। बसे रहो मेरे नयनों में, सुबह शाम तुमको ही टेरे।

48ए

ईश कृपा करना तुम हम पर, बालक तेरे दे प्यारा वर। इस दिल में रहना प्रभु जी तुम, वीणा गाये तेरे ही स्वर। चले सदा तेरी छाया में, किसी से ना यहाँ करें गिला। सांस जपें हरदम प्रभु तुमको, अपना मुझको तू जाम पिला।

चल चल कर थके यहाँ टूटे, पूछें तुमसे प्रभु क्यों रूठे? तुम बिन ना दीप जले मेरा, अपना लो िर रस्ता दीखे। बल ना मुझमें मैं अबल नाथ, तेरा ही एक सहारा है। इस जंगल में मैं भटक रहा, क्या दोष प्यार जो चाहा है।

तुम सकल सृष्टि के मालिक हो, नाचे सब एक इशारे पर। बिछुड़े तुम ना लगता जियरा, अँखियों से नीर गिरे झरझर। तुम लाज राखना चरण पड़े, कठपुतली तो हम हैं तेरी। ना सुरति हटे तुमसे मेरी, यह विनती सुन लो प्रभु मेरी।

49ए

जान सके ना हरि की माया, सबके दिल में वही समाया। जल में िरती मीन प्यासी, ;षि मुनि हारे भेद न पाया। नाम अनेंको रूप अनेंको, हरि को भूला रोवे काया। मन भज कष्ट मिटेंगे सारे, सब में ही है हरि की छाया।

अपने हाथ न जीवन डोरी, समझे ना हम दुख को पाते। छोटा सा जीवन ले आते, अपनी इसमें अकड़ दिखाते। जीवन दो पल का हरि भूलें, कठपुतली तू उसका खेला। नाच यहाँ जो मर्जी उसकी, लिये जा रहा तुझको रेला।

दिल हरि बसा यहाँ बहता जा, मैं को मिटा जगत सब उसका। ले जायेगी लहरें तुझको, अगम अगोचर पार न जिसका। स्वप्निल जग सुख दुख की छाया, कूल पकड़ न कोई आया। हरि जप ले बीतेगी रैना, बिन उसके मन चैन न आया।

जग में भटक न भूलो मनुआ, मृगमरीचिका मे ना पड़ना। हरि जप मन में आये चैना, ूल खिले बरसें यह नयना। शीश झुका हरि चरणों में मन, यादों में कटते सब बन्धान। सुरति लगा हर सांस उसी की, सत्य देख धाीरज धार तू मन।

50ए

साथ मतलब का यहाँ सब, जी गया मेरा यहाँ भर। लड़खड़ाते कदम मेरे, थाम लो यह मार्ग दूभर। दीनबन्धु तुझे पुकारूँ, तू बता कैसे रिझाऊँ? नीर यह अँखियाँ गिराती, तम घना मैं चल न पाऊँ।

चीख खोती शून्य में सब, तुम बिना यह आँख रोवे। कर कृपा दे दो सहारा, नाव मेरी पार होवे। विश्व के तुम हो रचयिता, सब चलें तेरे इशारे। पाते दुख भूले तुमको, बरसे नयना हम हारे।

*नाथ अपनी शरण में लो, क्यों छिपे मेरे सहारे। लाज मेरी के रखैया, दुख मिटाओ खड़े द्वारे। सांस तेरे गीत गायें, विनय नयनों में समाये। जगत तृष्णा मिटे सारी, धयान में तू ईश छाये।*51ए

चैन न आवे रहा न जावे, मनुआ हम कैसे समझावे। जनम जनम से भटक रहा हूँ, प्यासा चाहूँ प्यास मिटावे। हरि तेरे ही गुन हम गायें, तुझसे ही हम प्रीति बढ़ाये। उलझ उलझ मैं गिरा यहाँ पर, कृपा मिले तो ही पथ पाये।

मेरे देवता तुम ना रूठो, अँखियाँ रोती इनको लख लो। एक सहारा तुम ही मेरे, शरण तुम्हारी प्रभु अपना लो। जीवन दाता जीवन तेरा, कुछ भी यहाँ नहीं है मेरा। मर्जी तेरी से हम आये, कल ना जाने कहाँ सुबेरा।

अज्ञानी हूँ कुछ ना जानूँ, तुझे पुकारूँ रोना जानूँ। पार लगा दे मेरी नैया, खेवट मेरे तुमको मानूँ। झर झर नीर बहायें अँखियाँ, कहाँ छिपे तुम मेरे रसिया। जीवन का आनन्द तुम्ही हो, सूखे तुम बिन मेरी बगिया।

52ए

हरि हरि कहते बीते जीवन, कानों में बस बजे यही धुन। इस बगिया का तू ही मालिक, ना तड़ा अब तो ले तू सुन। अँखियाँ बरसे तुमको तरसे, बनो न निर्मोही तुम मोहन। एक सहारा तुम ही दीखो, कहाँ जाऊँ रूठो न मोहन।

द्वार तुम्हारे बैठ पुकारूँ, पीड़ा अपनी तुझे सुनाऊँ। जग के मालिक नाथ अबल हम, ना भूलों मैं नयन बहाऊँ। शीश धारूँ चरणों में तेरे, तोड़ न पाऊँ जग के घेरे। उलझ उलझ पड़ता मैं इसमें, दूर करो तम तुमको टेरे।

कठपुतली हम नाच नचावे, काहे को तू ईश छिपावे। नयन लड़े तुमसे यदि मोहन, नाचूं जी भर जिय सुख पावे। लाज राखना इस मेले में, खो ना जायें तुमसे बिन मिल। चरण पड़े हम बालक तेरे, तुम बिन मेरा जलता है दिल।

*पूजा को स्वीकार करो प्रभु, अज्ञानी मैं विधि से वंचित। अँखियाँ मेरी नीर बहाये, तेरे दर को करती सिंचित।*53ए

चले चल कर थक गये हम, ना पता कहाँ जायेंगे। मुश्किलें हैं जिन्दगी में, क्या तुम्हें हम पायेगे। नयन से आँसू बरसते, प्राण यह तुमको तरसते। आ मिलो मोहन हमें तुम, जा रहा जीवन भटकते।

द्वार तेरे हम खड़े हैं, तैरे नयनों में लाली। फूल तेरे बाग के हैं, रूठ न जा मेरे माली। प्यार की मैं प्यास लेकर, भटकता हूँ तम घना है। इंतजा करता तुम्हारी, बोल मोहन क्यों छिपा है।

डूबी जाती है संधया, पथ न दीखे रैन आवे। एक तेरा ही सहारा, नीर यह अँखियाँ गिरावे। खेल सुख दुख का बनाया, चाहें हम तेरी छाया। आस तू ही जिन्दगी की, न मिले तो रोवे काया।

54ए

मन रोये तुमको खो मोहन, क्यों भूल गया बीते सावन। प्यासा मैं जनम जनम का हूँ, तू सुना मुझे बन्शी की धुन। चरण पड़ू. मैं दास तुम्हारा, अँखियाँ मेरी नीर बहाये। कुछ ना जानू अज्ञानी मैं, तुम बिन धीरज कौन बंधाये।

अंखियाँ देखें हरपल रस्ता, मेरे दिल में तू ही बसता। अगम अगोचर पार न तेरा, दया होय तो दीपक जलता। जग के सुख दुख ंीके लागे, तेरी यादों में जो जलता। करूँ नीर से तेरी पूजा, प्यार बढ़े कट जाये रस्ता।

चल चल गिरूँ संभल ना पाऊँ, कैसे इस दिल को समझाऊँ। मेरा जियरा धाक धाक धाड़के, दर्द बता कैसे दिखलाऊँ। आदि सत्य तू अन्त सत्य है, वर्तमान का तू ही राजा। जैसा चाहे खेल रचावे, चाहूँ नयनों में तू बस जा।55ण

देख लो नजरें उठाकर, दिल में चैना पायेंगे। इस जहाँ में हम भटकते, ना पता कहाँ जायेंगे। मानता मैं झील सूखी, प्यार का झरना नहीं है। जग के मालिक पूछूँ मैं, छिप गया गम दे दिये है।

चलते हम मिट जायेंगे, नमन को स्वीकार करना। बह रहे जो नीर मेरे, न इन्हें तुम भूल जाना। आस तेरी तम यहाँ है, ज्ञान का दीपक जलाना। डोलती नैया हमारी, बनो खेवट पार करना।

तुम न देखो कौन देखे, द्वार तेरे का भिखारी। लाज मेरी राखना प्रभु, नयन से है अश्रु जारी। पी जगत के दन्श सारे, याद ले सब गम भुलाये। वीणा गाये तेरी धाुन, नयन में तू ही समाये।।

56ण

याद करूँ तुमको नहीं आवे, जियरा हरपल तू तड़ावे। जलता हूँ मैं विरह अग्नि में, तुम बिन कुछ भी नहीं सुहावे। सकल सृष्टि के मालिक हो तुम, मैं अबोधा प्रभु हूँ अज्ञानी। चरण पड़ू मैं दास तुम्हारा, नहीं भूल बहता है पानी।

पूजा की विधिा से मैं वंचित, दिल मेरा यह होता कुंठित। नयनों में मेरे बस जाओ, अंखियाँ रो कर करती सिंचित। जीवन यह क्यों सांसे लेता, मुझसे छिपा हुआ क्यों िरता। बालक तेरा मुंह ना ेरो, नहीं भूल तू अपना रिस्ता।

बीते रैना होय सुबेरा, कृपा दृष्टि प्रभु हम पर रखना। कर्म सदा शुभ होवें हमसे, मिले हमें मन्दिर का कोना। मिटती जाती सभी कहानी, धौर्य धारे ना मन तूानी। उलझ गिरे अपनी उलझन में, ज्ञान हमें दे तू ही ज्ञानी।57ण

ईश कृपा करना तुम हम पर, बालक तेरे अज्ञानी है। कृपा सिन्धाु तू जग का पालक, बहता नयनों से पानी है। सांसे गाये तेरे नगमें, नयनों में प्रभु बसे सदा तू। पार लगा जग की पीड़ा से, मुझसे हो ना कभी जुदा तू।

तुमसे मिलने जियरा तड़े, बगिया तेरी गुलशन महके। किसको पीड़ा कहें बता दे, सुने तभी यह जियरा चहके। तेरी पूजा करे सृष्टि सब, कण कण में तू और न दूजा। अंखियाँ मेरी रोये िर भी, चाहूँ यादों में तू बस जा।

नयन चढ़ावें जल प्रभु तुमको, कभी भूल ना, चाहूँ तुमको। जब भी गिरें थाम तुम लेना, तुम बिन दीखे ना कुछ हमको। लाज तुम्हारे हाथों में प्रभु, तेरी हम तो बस कठपुतली। क्यों ना आँख हमारी खुलती, जब तेरे हाथों में सुतली।

58ण

ना हँस पाये ना रो पाये, जीवन में हम क्यों कुम्हलाये। दास तुम्हारे अज्ञानी हम, कृपा मिले तो ही खिल पाये। बीता जनम भटकता िरता, दर्शन पाने जिया तड़ता। पार लगा दो मेरी नौका, प्यार मिले मैं देखूँ रस्ता।

नीर गिरावे अंखियाँ रिमझिम, तुम बिन मेरा सूना सावन। कोयल न कूके सूखे बगिया, कैसे बीतेगा यह जीवन। पाँव पड़ू आ जाओ निष्ठुर, जानूँ ना मैं कर्म के बन्धान। मर्जी तेरी से आये हम, दिल रोता करता है क्रन्दन।

नाम पिया मीरा ने तेरा, बनी दिवानी जग दुख विसरा। निज की मदिरा मुझे पिला दे, टूटे मृगतृष्णा का घेरा। हरि हरि मेरे प्राण पुकारें, चरणों को यह नयना धोवें। बीत गये पल कुछ पल बाकी, सुन लो दिल की व्यथा सुनावे।59ण

खेल तू कितने खिलाये, जान तुमको हम न पाये। आती सांसे चलते हैं, पीड़ हम किसको सुनायें। नीर यह अँखियाँ गिराती, पर तुझे यह नहीं पाती। सभी है अनजान गलियाँ, कैसे भेजूँ मैं पाती।

प्यार की ले भूख भटकूँ, तुझ चरण पर शीश धार दूँ। नयन जल से धोय पोछूँ, न विलग होना यह कह दूँ। अबल हम तेरा सहारा, कोई न दीखे किनारा। थाम लो बहियां हमारी, थक गया मैं नाथ हारा।

जगत के तुम ही रचैया, चाहें हम तेरी छैंया। देखो नयनों का पानी, बीत जाये अब न संधया। नयन में मेरे बसो तुम, गम भूलूँ जग के सारे। न मुझे भटकाओ विनती, बहते हैं आँसू खारे।

60ण

दिल नहीं लगता हमारा, इस जग से मैं हूँ हारा। नाथ अपनी शरण में लो, एक बस तू ही सहारा। आँख से आंसू निकलते, प्राण यह तुमको तरसते। न छिपो निर्मोही छलिया, तुम बिना क्यों सांस लेते।

डगर यह अनजान सारी, नयन से है नीर जारी। कह रहे अपनी व्यथा को, मुँह न मोड़ो तुम मुरारी। नयना बस जाओ मेरे, टूटें सब गम के घेरे। कटे रैना यह डरावे, तुम बिन हम किसको टेरे।

आँख मेरी रो रही है, जानूँ न क्यों करे देरी? छिप गया तू छोड़ हमको, सब लगाते यहाँ ेरी। सृष्टि का मालिक तुही है, नाचें कठपुतली बनकर। धयान हरपल हो तुम्हारा, ना लगता रि कोई डर।

खोजती अंखियाँ तुझे हैं, प्राणों का तू आधारा। ना कभी तुम रूठ जाना, तुझ बिना सब जगत खारा। प्रीति तुझमें ही रहे प्रभु, ना सुरति की डोर टूटे। नयन रिमझिम करें वर्षा, प्यार का हीोत ूटे।61ण

हरि की अन्तस में ज्योति जला, पथ देगा पागल क्यों रोवे। जीवन के अनुभव तीखे हैं, हरि याद करो अब ना सोवे। तृष्णा के चंगुल में ंसकर, दुख पावे तू मन अब ले सुन। हरि जप ले चैन नहीं उस बिन, सच जान नहीं है रस उस बिन।

क्षण भंगुर स्वप्निल सी दुनिया, क्या प्रीति लगावे भूला पिया। हरि भज ले शान्ति मिलेगी मन, तपते मारग की वह छैया। अनजानी गली जाना कहाँ, आंखों से नीर बहें मेरे। पी ले मन जाम उसी का तू, कर विनय हरि नहीं मुँह ेरे।

हरि लाज राखना जग स्वामी, विनती मेरी अब ना सोवे। चल चल कर थके तुझे खोजे, नयना मेरे हरपल रोवें। तुम बिन ना चैन मिले छलिया, मेरी रोवे हरपल अंखियाँ। केवट बन पार करो नैया, मैं पड़ू. नाथ तेरे पैयां।

62ण

तेरी मर्जी चलते हम, अपनी कृपा रखना सदा। डगमगाती नाव मेरी, प्रभु ना कभी होना जुदा। नयन यह सुपने संजोते, तुझे भूले नाथ रोते। प्रीति का प्याला पिला दे, चाहें तुम से ना विछुड़ते।

खोजते मग में अन्धोरा, ना पता कब हो सुबेरा। नीर बहते देख लो तुम, काहे मुझसे मुँह ेरा। अबल हम अज्ञान में हैं, तू जगत का है उजाला। प्यार की भिक्षा हमें दो, मुझे पिला अपनी हाला।

जाते हैं सारे यह दिन, आखों से बहती गंगा। ठौर नहीं तुझ कृपा बिन, न कभी मन होता चंगा। अब छिपो न मुझसे छलिया, प्राण के तुम ही सहारे। लाज हाथों में तुम्हारे, रो रहे तुमको पुकारें।

63ए

हरि जप हरि जप यह कटे फ़र, दुनिया के ना लागे फ़िर डर। अपनी मर्जी से ना आना, हरि की मर्जी फ़िर बहे किधार। मत मन उलझा जग में पागल, सुख दुख के घिरते हैं बादल। पल पल में रंग बदलता सब, शाश्वत में जी ले तू हरपल।कितने ही आये छूट गये, आते हैं हरपल कूल नये। मन पकड़ न कर तू बहता जा, हरि की यादो को सदा लिये। हरि हरि भज मन का कलुष मिटे, जीवन में फ़िर संतोष घटे। झिलमिल करती स्वप्निल दुनिया, वह धान्य हुए जो पिया रटे।

चल पैरों में जब तक ताकत, पर भूल नहीं जाना उस घर। पिय में यदि सुरति लगे पागल, फ़िर यहाँ नहीं लगता कुछ डर। बरसात बरसती आँखों में, सुपने ले ले जीती काया। जीवन यह एक पहेली है, न कोई इसे सुलझा पाया।

मर्जी तेरी ना चले यहाँ, उसकी मर्जी से बहो यहाँ। झड़ते पत्ते इंगित करते, कुछ पल के हम मेहमान यहाँ। हरि जप हरि जप सन्तोष घटे, सब तृष्णा का संसार मिटे। कर्ता बन मन जो दुख पावे, हरि हिया सजा संताप मिटे।

64ए

हरि तुम्हारे दास हैं हम, निज मन्दिर में दे डेरा। घूमते अनजान गलियाँ, चाहते हैं प्यार तेरा। काली रैना अन्धोरा, चाहते मिलता किनारा। डोलती नैया हमारी, जाने न हो कब सुबेरा।

शीश को दर पर झुकाये, नाथ कब से हम खड़े हैं। देख लो नजरें उठाकर, नीर मेरे गिर रहे हैं। तैरे नयनों में लाली, फ़िरता मैं झोली खाली। सृष्टि का तू ही रचियता, गिर रहे क्यों नीर माली।

कर्म के बन्धान बंधाा मैं, नाथ चलता जा रहा हूँ। खत्म कब हो श्रृंखला यह, किरपा मैं चाह रहा हूँ। तू नचाये नाचते हम, तेरी कठपुतली प्रभु है। दर्द का सागर ऊनता, छिप गया तू क्यों कही है।

*चरण में अपने बिठा लो, आंसुओं से पैर धाोऊँ। कुछ नहीं है पास मेरे, बस तुझे मैं दर्द देऊँ।*65ए

हरि प्रीति करो हो शरणाई, वह दुख भंजक दुख ना आई। सकल सृष्टि का स्वामी वह, अँखियाँ क्यों फ़िर भर भर आई। हरि भूले मनुआ पावे दुख, उसके बिन कभी मिले न सुख। चरणों में हरि के गिर जा मन, सब दन्श मिटे हरि बोलो मुख।

पतवार उसी के हाथों में, जप आती जाती सांसों में। क्षण भंगुर स्वप्निल यह दुनिया, मत उलझ यहाँ की बातों में। कोई न ठिकाना है पगले, हरि की गोदी में खेल रहा। मर्जी उसकी जैसा राखे, आशायें ले मन मचल रहा।

हरि हरि कहते बीते जीवन, सब बीता जाता अब कुछ पल। अखियाँ यह नीर बहाती है, मत भूल उसे तेरा सम्बल। अन्तस में ज्योति जगाता वह, सब तम को दूर भगाता वह। निर्भय होकर जग में घूमें, विष पीता अमृत होता वह।

हरि हरि जप और नहीं है कुछ, सब यहाँ स्वार्थ का मेला है। जिसने भी हरि का नाम पिया, जीना बस उसका जीना है।

66ए

तुम दीनबन्धु जग के पालक, कैसे खोजूँ मैं तुमको रब? अँखियाँ यह नीर गिराती है, तेरे बिन जिय लगता ना अब। अँधियारी रातें डर लागे, ना समझ सका तेरी माया। थक हार पुकारे यह काया, हरि तेरी मैं चाहूँ छाया।

तृष्णा के सागर में खोये, चल चल कर हम फिर फिर रोये। तुम बिन ना पीड़ मिटे दिल की, तुम छिपे बता कैसे जीयें? आंखों से बहती गंगा है, सांसे तेरा सुमरन करती। कहो जाऊँ कहाँ अबल नाथ, प्रभु हाथ जोड़ विनती करती।

नैया मेरी डगमग डोले, अब तू ही पार लगायेगा। थक हार चुका कुछ बल ना ही, बस बाट निहारूँ आयेगा। चरणों में शीश धारूँ तेरे, विनती सुन ले ना मुँह फेरे। बस सुरति सदा यह बनी रहे, नाचे हम डोर हाथ तेरे।67प

सूना लागे तुम बिन मोहन, जीवन के रस तुम ही रसिया। प्यारी दुनिया जिय न लगत है, तेरी राह निहारें अँखियाँ। मन के ताप मिटाओ सारे, बन्शी धुन पर गाओ प्यारे। जग की पीड़ा मैं सब भूलूँ, नयन बसो तुम प्राण पुकारे।

जोगन बनी याद में तेरी, छम छम नाची भई दिवानी। विष का प्याला पीया हँसकर, मीरा नयन बहाये पानी। इन पथरीली आंखों में तुम, प्यारे मोहन प्यार बढ़ाओ। प्रेम झरे नयना यह बरसे, मुरझाया जो सुमन खिलाओ।

माना स्वप्निल सारी दुनिया, इतना दर्द दिया क्यों छलिया। तेरे दर तक कैसे पहुँचू, अबल प्रभु मैं थाम ले बहियां। आओ आओ तुम्हें पुकारें, बचे शेष पल रास रचा ले। जीवन नदिया बहती जाये, जल तेरा पी प्यास बुझा ले।

68प

दीपमाला से सजाऊँ, तुम्हारा मन्दिर बनाऊँ। नयन जल से करूँ पूजा, चाह पल भर ना भुलाऊँ। शरण में मोहन मुरारी, राखते तुम लाज मेरी। तुम कृपा रखना सदा ही, प्यार पाऊँ मैं मुरारी।

ढूंढ़ते फिरते तुझे हैं, छिपे कहाँ प्यारे छलिया। तुम बिन यह जियरा तड़पे, नीर वर्षा करें अँखियाँ। ;षि मुनि सब करते पूजा, खेल सुख दुख के खिलाता। ना कोई तुमसा दूजा, चरण में मैं नाथ पड़ता।

फूल तेरे बाग के हैं, और कुछ तो हम न जाने। नयन से बहती हैं गंगा, विनय अपना दास माने। धूप छाया खेल दुनिया, तुम बिना रूठी है दुनिया। ज्ञान का दीपक जला दो, पाऊँ मैं तुमको छलिया।69प

हरि ओम् कहो मन ओम् कहो, दुख दर्द मिटें मन ओम् कहो। सब जग का वह ही रखवाला, मन डरता क्यों हरि ओम कहो। मन उसे जपो है शान्ति वही, ना और किनारा दिखे कही। साथी अँधियारी रातों का, इस धारती का है वही मही।

जीवन वह ही अमृत वह ही, इन सांसों की धाड़कन वह ही। सारे जग का वह मालिक है, मन भूल न उसको पास यही। उस बिन रोयें तेरी अँखियाँ, वह नाच नचाये बन छलिया। मन सुरति लगा ले उसमें तू, तपते मारग की वह छैया।

शाश्वत वह ही मन उसे जपो, फटते सब दुख के बादल हैं। जग जाल यहाँ सब झूठा है, कुछ पल का यह सब खेला है। मन सांस सांस में उसको जप, ना और लगा दिल यहाँ कहीं। सांसों में यदि वह रम जाये, समझे मन तू सब जगह वही।

70प

हरि तुझे हम ढूंढ़ते हैं, पाते पता तेरा नहीं। नयन से आंसू बरसते, क्या हरि मिलोगे तुम नहीं? तेरी दुनिया भटकूँ मैं, छल तू क्यों करता छलिया। अबल हम तेरे सहारे, प्यार दो मैं पड़ू पैंया।

बीत जाये यह न संधया, जिन्दगी की आस तू ही। देखता मैं राह तेरी, आ मिलो अरमान यह ही। तेरी माया जानते न, मिलती पर तुझसे छाया। दास को अपना बना लो, रोती है मेरी काया।

*नयन गंगा जल बहाये, चाहें बह उसमें जाये। ना कभी देखें पलट कर, तुझ चरण को नाथ पायें। मन पावन रूठा सावन, कर्म की जंजीर भारी। तुझ कृपा बिन ना कटे यह, लाज राखो हे मुरारी।*71ण

शुभ हो सदा जिन्दगी में प्रभु, यही मांगते तुमसे वर दो। नीर बहायें जो यह अंखियाँ, बढ़े प्रीति तुममें यह बल दो। जीवन छोटा यहाँ भटकते, नयन तुम्ही को यहाँ तरसते। इतना नहीं रूलाओ मोहन, प्यारे मेरे प्राण तड़ते।

नमन हमारा प्रभु अब ले लो, ढूंढ़ ढूढ़ कर मैं हूँ हारा। कहाँ जाये न जाने नौका, नाम तेरे का प्रभु सहारा। अबल नाथ हम अज्ञानी हैं, पर तेरे बालक है रसिया। बस जाओ तुम मेरे दिल में, तपे दुपहरी दे दो छैया।

आंखो से जाती ना लाली, ?ूल बाग के तेरे माली। देख उठा कर नजरें हमको, डरा रही हैं रातें काली। जीवन की तुम्ही आशा हो, अंखियाँ नीर बहावें मेरी। शरण तुम्हारी नाथ पड़े हम, करो पार प्रभु नैया मेरी।

72ण

नौका तुम बिन पार न होवे, इतना दर्द बता क्यों देवे? जग के पालक विनती सुन लो, जियरा मेरा यह घबरावे। दीनबन्धु तुम दुख के हर्ता, याद तुम्हारी आवे रोता। विछुड़ गये क्यों इस मेले में, सदा राह मैं तेरी तकता।

हरि हरि भजे चैन मन आवे, अंखियाँ निशदिन नीर बहावे। मुझसे मोहन रूठ न जाना, चाह प्रीति बढ़ती ही जावे। सारी दुनिया के रखवाले, लाज राखना शरण तुम्हारी। मृगतृष्णा ना मुझे सतावे, बढ़ू तेरे पथ चाहत मेरी।

चल चल कर मैं हार गया हूँ, खे दे नैया खेवन हारा। नयनन में बस जाओं मेरे, धयान निरन्तर बढ़े तुम्हारा। आँसू से करता मैं पूजा, इनको कभी नहीं कम करना। बह जाऊँ बस इस गंगा में, सदा निहारें तुमको नयना। 73ण

चलने की सामर्थ न मुझमें, गिरूँ उठूँ आंसू ढलकाऊँ। बिछुड़ों ना तुम मुझसे प्रियतम, बहते नयना तुझे दिखाऊँ। चल चल कर मैं हार गया हूँ, तेरा ना दीदार हुआ पर। कैसे इस दिल को समझाऊँ, बरसे मेरे नयना झर झर।

निर्बल को बल देने वाले, बल दो चल पथ पर मैं आऊँ। अंधियारी रातों में प्रभु जी, सदा ज्ञान का दीप जलाऊँ। मेरे सम्बल तुम्ही सहारे, तुझ बिन कृपा यहाँ सब हारे। ?ट जाते सब दुख के बादल, आता तेरे कोई द्वारे।

बेगाना बन जग में घूमूं, मिले चरण तेरे मैं चूमूं। छिपे कहाँ मैं बालक तेरा, बढ़े प्यार तो ही मैं झूमूं। सुमर सुमर कर प्यास बुझावे, मेरे जिय को तू तड़ावे। जला विरह की अग्नि भस्म हो, उड़े राख वह तुझ तक आवे।

74ण

हरि बोलो हरि हरि ही बोलो, मन की आंखों को तुम खोलो। उस बिन चैन न पाये मनुआ, सारे जग के सुख से तोलो। आज यहाँ कल कहाँ ठिकाना, किसने जाना सब बेगाना। कूल छूटते जाते सारे, पकड़े काहे बन दीवाना।

विछुड़ा जाता सारा मेला, पीछे से आता है रेला। आंख मीच मत सोवे मनुआ, संग न कोई जान अकेला। मृगतृष्णा ले रहा भागता, अंहकार को खूब बढ़ाया। सुख में सब दुख में ना कोई, पगले तू यों ही भरमाया।

दिल में हरि की ज्योति जला ले, इन नयनों में हरी बसा ले। जीवन की इस पगडण्डी पर, डर न लगेगा हरि को जप ले। हरि हरि जपो चैन मन आवे, दिल के सारे कष्ट मिटावे। सारे जग का पालक है वह, काहे अपना जिया जलावे।75ए

हरि भज लो शाश्वत वह ही है, जीना मरना उसमें ही है। संग तुम्हारे सदा खड़ा वह, उलझ जगत में क्यों रोवे हैं? सोंच रहा क्या मन तू पागल, बीती नहीं भुला क्यों पाये। रंग बदलती इस दुनिया में, रंग यहाँ सब बदले जाये।

दर्द मिटें सब हरि जप से ही, बनते कांटे भी ूल यहाँ। व्यर्थ सोंच में पड क्यों पागल, तू भूल रहा हरि छिपा यहाँ। बीत गई छोड़ो बीती जो, इस थोड़े जीवन को जी लो। मिटता जाता है यह तन भी, किसको पकड़े सबको भूलो।

नेह बढ़े हरि, ि़कर घटे सब, ले जाये जहाँ जाये वहाँ। अपनी क्या सब अर्जी उसकी, बहता जाये बन लहर यहाँ। नयनों के आंसू उसको दे, और नहीं कुछ जो उसको दे। कठपुतली बन नाच रहा तू, मैं को छोड़ चरण सिर रख दे।

76ए

जीवन एक पहेली माना, गहराई को किसने जाना। ;षि मुनि हारे धयान लगाकर, कुछ भी हाथ न हरि घर जाना। हरि हरि गाओ जग मेले में, ताप मिटाओ इस खेले में। इस बिन चैन न आयेगा मन, कितने सुपने ले नयनों में।

नीर चढ़ा दे हरि चरणों में, जान यहाँ ना कुछ भी बस में। बह जाये यह लहर कहाँ पर, अंहकार तज बसा नयन में। हरि हरि जप तू यहाँ अकेला, मिटता जाता है सब खेला। कठपुतली तू काहे रोवे, हरि पर छोड़ो मिटे झमेला।

हरि हरि जप ले चैन मिलेगा, दिल का सोया कमल खिलेगा। और न कुछ आधाार जगत में, हरि बिन सदा यहाँ तड़ेगा। आता याद कौन तुम सोंचो, अंधियारी रातों में बोलो। खारी लगती सारी दुनिया, अब तो अपने नयना खोलो।

नीर बहें पर उसे न भूलो, हरि हरि जपो न बहियां छोड़ो। अन्तिम पल में वही साथ है, मर्जी उस पर सारी छोड़ो। पार करेगा वह ही नौका, ज्ञान धयान वह ही सब देगा। पड़ चरणों में करो विनय यह, चाहे कृपा सदा तू देगा।77ए

आ गये हम शरण तेरी, ना पता कहाँ जायेंगे? नयन मेरे रो रहे हैं, तुमको क्या हम पायेंगे? जन्म कितने हुए पहले, जन्म यह भी जा रहा है। कर्म बन्धान में बंधाा हूँ, तोड़ हम ना पा रहे हैं।

हरि कृपा तेरी मिले तो, नाव मेरी पार होवे। गरजता सागर यहाँ है, देख लो ना हार होवे। नयन यह आंसू बहायें, पास में कुछ भी नहीं है। मैं कहाँ जाऊँ बता दो, प्यार दो डरता जिया है।

जग का मालिक तू ही है, नाचें हम कठपुतली बन। मर्जी तेरी नाचें हम, प्रभु ज्ञान दो हर लो चुभन। हरि नमन को स्वीकार कर लो, दास तेरे मुँह न ेरो। प्रीति मेरी बढ़े तुझमें, पीड़ दिल की नाथ हर लो।

78ए

मन मेरे क्यों है उदास, जिन्दगी की क्या है प्यास। घूमा तू न तृप्ति होती, लिये जग में कितनी आस। चल अकेला ना ठिकाना, लुप्त होवेगें कहीं पर। चलना जीवन की निशानी, और कुछ बस ना यहाँ पर।

सोंप हरि हाथों स्वयं को, बन जा कठपुतली उसकी। जायें जब न जोर चलता, आये जग मर्जी उसकी। तपे धारती वह बरसता, मुँह से पर कुछ न कहता। मैं कहाँ जाऊँ बता दो, तुम बिना यह दिल तड़ता।

थक गया मैं द्वार आया, न मुझे लौटाना खाली। ूल तेरे बाग के हम, राखना तुम लाज माली।79ए

हरि भज हरि भज मन तू हरि भज, प्रीति जगत की मन तू दे तज। तेरे बस में नहीं यहाँ कुछ, सोंच समझ ले मृगतृष्णा तज। कितना दौड़े थक थक लौटे, दन्श लगें जग के तू तड़े। जितना ज्ञान दिया हरि तुझको, मन सन्तोष करे तो चहके।

जीवन है दो दिन का मेला, जान यहाँ तू सदा अकेला। यहाँ वासना खेल खिलाती, आता पीछे से है रेला। कर्ता बन तू कर्म करे ना, बनो पोंगरी स्वर हरि गाये। अहंकार को तज दे पागल, उसकी दुनिया वही चलाये।

हरि हरि गाओ मन सुख पाओ, पीड़ा अपनी काहे दिखाओ। पीड़ा उबल रही जग अन्दर, प्यार दे सको तो दे जाओ। हरि हरि भजो न रस्ता दूजा, सोंचे जग की दुख में डूबा। बह ले लहर बना सागर में, हरि ही खेले देख अजूबा।

80ए

हरि भजन करो मन सुख पाओ, सब ताप मिटाओ जीवन के। वह ही रखबाला है सबका, हरि भजन बिना मनुआ भटके। चलती सांसों में धयान लगा, क्यों देख रहा जग ठगा ठगा। हरि से मन तेरा नेह बढ़े, दीखे जग में बस वहीं रंगा।

जपता जा तेरा घर हैं वह, मन भटक रहा तू हरि को खो। जप पार करेगा वह नौका, विश्वास करो मन मैं को खो। जग में सुख ना ही भटक रहा, आशाओं को ले टूट रहा। विश्वास किया जिसने हरि पर, बन लहर नदी में सदा बहा।

जीवनदाता सांसे उसकी, जागो मन यहाँ बहुत सो ली। आना जाना मर्जी उसकी, मन भजन करो हम कठपुतली। हरि जाप करो मन हरपल तू, टूटे न सुरति हरि ही तेरा। जो नीर गिरें इन अँखियों से, हरि स्वीकारो ना कुछ मेरा।81ए

निहारती सूनी आंखें, लहर हर उठ गिर रही है। ना पता यह जिन्दगी क्या, ले प्रयोजन चल रही है। देखते ही देखते सब, कुछ बदलता जा रहा है। वासनाओं को पकड़ तू, कौन सुपना ले रहा है।

पथ है दुर्गम चलता जा, सब तरु कुहरा छाया। चलते चलते नहीं पता, जाये डस अपना साया। जिन्दगी यह जा रही है, कौन से सुपनों को लेकर। आस क्या ले जी रहे हैं, दिन दो फिर कोई न घर।

मन नहीं लगता यहाँ तो, दिल लगा ले राम से तू। बुि) ने घोखा दिया है, डूब जा श्रीराम में तू। अश्रु अब सूखे हमारे, बहुत रोये यहाँ रोये। धौर्य नहीं हमको मिला, गिरता हूँ तेरे द्वारे।

82ए

बने बन जा तू उपासक, खो इसी तू शून्य में जा। श्रोत सर्जन का यही है, मन इसी में लुप्त हो जा। शून्य सबको सम्भाले, बन पुजारी इसी का मन। कठिन कुछ भी तो नहीं है, ना नियन्ता तू यहाँ बन।

नहीं इससे बिलग कुछ भी, शून्य में उठती लहरें। क्यों नहीं मन शून्य समझे, शून्य में गिरती लहरें। ईश्वर भटकता स्वयं है, स्वयं की यह खोज करता। जख्म खाकर भी अनेकों, नहीं कभी पथ में रूकता।

स्वयं ही खेले स्वयं से, नाच यह रूकता नहीं है। कितने ही यह रूप धारता, पार मन इसके वही है। अपनी मन्जिल न कोई, चलता बस जा रहा हूँ। आँख मैं देखूँ उठाकर, शून्य को ही पा रहा हूँ।83ए

गान दिये जा इस जीवन को, मान दिये जा मन तू सबको। प्यार दिये जा मिले कर में, दे मुस्कान यहाँ तू सबको। अपनी अपनी लिये कहानी, चलता ही रहता यह जग है। पीड़ाओं से पीड़ित जग है, प्यार जगत में सब चाहें है।

देख सके ना इस दुनिया को, वह क्या सन्देश सुनाते है। ।ूल खिल रहे इस बगिया में, झड़ते ।िर रोक न पाते हैं। अनन्त जीव इसी दुनिया में, यात्रा पर अपनी चलते है। सब यात्रा होती स्वयं यहाँ, आँखों में आंसू पलते है।

मन झूम झूम हरि को गा ले, ले जाती नदिया तू बहले। आता है सागर देख निकट, सब पीड़ हरे मन हरि जपले। मन्जिल का हमको पता नहीं, हरि ले जाये वह ही मन्जिल। मन मैं को छोड़ वही नाचे, ना घबरायेगा तेरा दिल।

84ण

बीत रहे दिन रोवे अंखियाँ, ढूंढू. कहाँ तड़ता जियरा। हरि को भूला भटक रहा हूँ, हरि आओ ना लागे जियरा। जान यहाँ मन सदा अकेला, हरि हरि जपो जगत रस छोड़ो। परिवर्तित जग का यह मेला, अमृत पी लो, दुख को छोड़ो।

किसको पकड़े हाथ न आये, कूल यहाँ सब छूटे जायें। पकड़ छोड़ मन हरि को भज ले, मर्जी उसकी वह ले जाये। कौन यहाँ मैं कौन यहाँ तू, रूप बदल कर वह ही आये। मर्जी चले सदा ही उसकी, जब चाहे लाये ले जाये।

हरि हरि जप ले और नहीं सुख, आँख खोल बिखरा जग में दुख। हरि का जिसने जाम पी लिया, नहीं सताते ।िर जग के दुख। तज दे मैं को, हरि हरि जप ले, कठपुतली बन यहाँ नाच ले। डोर उसी के हाथ न तेरे, सुरति उसी में कर मन बह ले।

धूप छांव का खेल यहाँ पर, अंखियां नीर गिराती झर झर। नयनों से आंसू जो बहते, उसे चढ़ा चरणों में सिर धार। प्राण पुकारें हरि हरि बोलो, हरि की दुनिया हरि सहारे। चरणों की बस धूल मिले प्रभु, तर जाऊँ मैं उसी सहारे।85ण

इस दुनिया का तू रखबाला, कैसे अपनी प्यास बुझाऊँ? शीश चरण धार रोना चाहूँ, अपना दिल यह तुझे दिखाऊँ। चल चल हारा तुझे न पाया, जीवन सारा व्यर्थ बिताया। इन नयनों में आंसू आये, किसे कहूँ रोवे यह काया।

नहीं भूल सांवरियां मुझको, जनम जनम का दास तुम्हारा। प्राण पुकारें छिपों नहीं अब, टूटे ना दिल का इकतारा। मृगतृष्णा में रहा घूमता, जल का नाम निशा न पाया। थक कर तेरे द्वार पड़ा हूँ, प्यासा कंठ बहुत भरमाया।

हरि हरि कहते बीते जीवन, तृष्णा मुझको नहीं सतावे। चाह नयन में तू ही दीखे, स्वप्नो से भी तू ना जावे। चरण पडू. ना मुझे भुलावे, याद तुझे कर भीगे नयना। याद सदा तेरी ही आवे, सांसो में तुझमें ही बहना।

86ण

हरि तेरे हम द्वारे आये, शरण तुम्हारी आंसू आये। जनम जनम से भटक रहा हूँ, प्यार मिले तब कोई पाये। दाता तुम मैं सदा भिखारी, अबल नाथ क्यों अंखियां ।ेरी। दीनबन्धु तुम जग के कर्ता, तरस रहा मैं कर ना देरी।

बिछुड़े क्या कसूर था मेरा, बहती गंगा याद नहीं कुछ। अब तो मा। करो दुख भंजक, करूँ अर्चना पास नहीं कुछ। पल में हंसे कभी ।िर रोवें, सुख दुख का है मेल यहाँ पर। तड़े जिवड़ा हाथ नहीं कुछ, जनम मरण का खेल यहाँ पर।

देवे मन पल पल में धोखा, पार लगे ना तुम बिन नौका। अन्तर्यामी घट की जानो, बरसे नयना दे दे मौका। सदा करें हम तेरी पूजा, चाहें रहे न घट में दूजा। आदि अन्त तू सदा सत्य है, वर्तमान का भी तू राजा।87ण

जायें कहाँ तुम ही कहो, पथ कोई भी न दीखता। कैसे बता लगायें दिल, तन अश्रु से है भीगता। मुख को न मोड़ो जिय डरे, अंधियारी रात न प्रकाश। तेरे चरण में हम पड़े, सुनसान पथ तेरी आस।

दया तुम्हारी चाहता, ढूंढू कहाँ मैं हूँ अबल। जग के रखैया तुम सुनो, चल कर गिरूँ न पग में बल। नयनों से नीर बह रहें, तुमको ही ईश जप रहे। यादों में तेरी खोयें, कुछ तो करो ना हम रहे।

पाऊँ तुझे दो वर मुझे, आंसू बहें यह दूँ तुझे। कीमत जग में ना है कुछ, ना और कुछ जो दूँ तुझे। हरि द्वार तेरे हम पड़े, नजरें उठा के देख लो। जायेगी बीत रैन यह, टूटा है दिल न अब छलो।

८८ण

जग के पालक तुम हो सर्जक, दिल मेरा रो तुझे पुकारे। कहाँ छिप गये मेरे छलिया, देखो हमें गिरा हूँ द्वारे। तुम बिन सूनी सारी दुनिया, खूब बहायें पानी अँखिया। टूटी वीणा स्वर न उठते जीये कैसे बोलो छलिया।

तेरा धयान धारे हम निशदिन, बीत जायेगे सारे यह दिन। तेरी यादें प्यारी लागें, वसो नयन में मेरे मोहन। कहाँ जाऊँ बतला दो तुम बिन, नहीं किनारा कोई दीखे। बहूँ तुम्हारी गंगा में मैं, सब कुछ भूलूँ तू ही दीखे।

*दीनबन्धु तुम दुख के हर्ता, अबल नाथ हम रोना जाने। विधि ना जाने आँसू आवे, दुख हरों तुमको ही माने। डगमग डगमग नौका डोले, विछुड़ो ना हम तुझे बुलावे। प्रीति निरन्तर बढ़ती जाये, डर न लगे यादे ले खोवें।*८९ण

राम के संग है बहारें, खोज मन तू राम को। आँख से हुआ वह ओझल, चाह उसके प्यार को। कंठ प्यासा आंख रोये, वह मिटाये प्यास को। दुख विनाशक जगत पालक, वह मिटाये पीड़ को।

खिले बगिया आओ राम, सूख यह तुम बिन गई। बरसे सावन आये तू, धुन उठे हरपल नई। देखते हैं राह तेरी, दिल पसीजेगा कभी। ऐसे पत्थर न बनो तुम, रोवें न आते कभी।

आ मिलो तड़ाओ न अब, याद करते राम है। ढल रही यह जिन्दगी अब, कुछ समय की बात है। सुमरण करें सदा तेरा, सांस यह जपती रहे। देख लो गिरते आंसू, विनय कर तुमसे कहें।

९०ण

शरण तेरी मैं मुरारी, नयन से है नीर जारी। किस जगह खोजूँ तुझे मैं, थक गिरी मैं नाथ हारी। सब जगह तू ही यहाँ हैं, क्यों रहा रो रि जहाँ है? दुख मिटाओ दुख के भंजक, प्यार का भूखा जहाँ है।

देखूँ छवि मैं तुम्हारी, ना कभी विछुड़ो मुरारी। प्यार की गंगा बहा दो, डूबूँ मैं उसमें सारी। इस जगत का तू रचैया, नाचें सब ता ता थैया। चरण पड़ती प्यार दे दे, टूटे नहीं डोर सैंयां।

*बांसुरी अपनी बजा तू, नाचुंगी सब भूल पीड़ा। दिल का मालिक तू मोहन, बचे कुछ पल करो क्रीड़ा। चीर दिल कैसे दिखाऊँ, नजरे राह में बिछाऊँ। देख ले आँखें उठाकर, नयन के मोती चढ़ाऊँ।*९१ण

मन हरि जपो वही सुखनन्दन, खिले कमल दिल का दुख भंजक। नौका तेरी पार करेगा, क्यों जिय करता तेरा धाक धाक। उसको भूल सभी दुख पाते, सबका है बस वही ठिकाना। छोड़ जगत की झूठी तृष्णा, आती संधया हरि घर जाना।

धूप छांव का खेल जगत में, दौड़ो कितना सुख ना इसमें। हरि जप ले कर धयान उसी का, गाती सृष्टि उसी के नगमें। दीनबन्धु वह जग का पालक, सर्जक वह ही जग का चालक। बहे नीर मन कलुष धुले सब, जप हरि सांसे आये जब तक।

हरि जप सदा साथ वह तेरे, कर विश्वास तुझे वह घेरे। उसे भूल पाते हम दुख को, धान्य प्राण जिसके हरि टेरे। हरि हरि गाओ उसे मनाओ, जीवन के सब ताप मिटाओ। उसकी दुनिया वह ही जाने, हरि को गाते लय हो जाओ।

९२ए

तुम बिन ज्ञान कहाँ से लाऊँ, जीवन कैसे सफल बनाऊँ। अन्तर्यामी जग के पालक, सुन ले दिल की तुझे मनाऊँ। जीवन में तुम करो उजाला, पिला हमें तू अपनी हाला। पीकर जाम तुम्हारा हे हरि, तुझे पुकारूँ बन मतबाला।

थक थक गिरूँ चला न जाता, आशा आयेंगे हरि भी क्षण। सम्बल मेरा तोड़ न देना, दिल में रहो न बिछड़ो इक क्षण। प्रीति बढ़े मिट जाऊँ इसमें, सांसे गायें तेरे नगमें। यादों में तेरी खो जाऊँ, मिटूँ निभा दूँ प्यार की रस्में।

*जीवन दाता जीवन तेरा, नहीं यहाँ पर कुछ भी मेरा। सुख दुख की नौका में बहता, तुम बिन कोई नहीं सहारा। शरण नाथ तुम मुझको रख लो, तुझ मन्दिर में दीप जलाऊँ। सांस सांस में धवनि हो तेरी, कुछ ना जानूँ तुझे मनाऊँ।*९३ए

दर दर डोलूँ खोज रहा हूँ, नीर बहावे मेरी अँखियाँ। इस जीवन को देने वाले, तुम बिन रहा न जाता सैंया। दीनबन्धु तुम जग के पालक, बल दो पहुँचूँ तुझ चरणों तक। सुरति रहे प्रभु हरपल तेरी, आवें यह सांसे हरि जब तक।

एक सहारा हरि तू ही है, चाहूँ प्यार मैं भटका हारा। नौका मेरी पार लगा दे, आंसू की बहती है धारा। उलझ उलझ यह जाता मनुआ, चल चल गिरें न पावे सैया। कृपा मिले तेरी तब ही सुख, तपस मिटे हम पावे छैया।

जीवन दौड़े पंख लगाये, अपनी पीड़ा किसे दिखायें। सूनी सारी दुनिया लागे, इतना मुझको क्यों तड़ायें? नयना बरसे रिमझिम रिमझिम, आस मिलन की ले धाड़के दिल। शीश झुकाये राह देखता, तपस मिटे कब बरसे बादल।

९४ए

थोड़ा सा जीवन यह, शिकवे जग से करते। सुपन सुंजोते कितने, टूटे तब हम रोते। अस्थिर सभी यहाँ है, मन क्यों उलझ रहा है। हरि गीतों को गा ले, देखो सब बहता है।

तेरे नयना छलके, हरि याद कर सुमर ले। सुख दुख का वह मालिक, कितना यहाँ भटक ले। तृष्णा यहाँ नचाती, दिल की न पीड़ जाती। नयन बहाये धारा, ना प्यास वह बुझाती।

*हरि एक नाम सांचा, दिल टूटे की आसा। मन याद कर उसी को, उससे मिले दिलासा। स्वप्निल सारी दुनिया, जप बीतेगी रैना। बसते हरि जिस दिल में, सुख का बहता झरना।*९५ए

मन हरि जपो प्रीति हरि कर लो, जग के ताप मिटाये भज लो। आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान में उसे न भूले। कहाँ जा रहे नहीं किनारा, बहा हमें ले जाती धारा। हरि सुमरो मन चैन मिलेगा, नयन नीर वर्षावे धारा।

सागर यह नाचे तरंग बन, मैं तज सागर कभी न भूलें। लहर यहाँ सागर को देखे, मिटते दुख जाने वह खेले। कुछ पल को यह सांस धाड़कती, मिट जाती खो जाते बैना। कोई यहाँ बड़ा ना छोटा, प्रकृति नचाती बना खिलौना।

हरि हरि जप मन कलुष मिटे सब, अन्धाकार में दीखे रस्ता। तृष्णाओं से हुआ पराजित, रोवे, धौर्य जपो हरि देता। हरि हरि जपो संग वह तेरे, उसे भूल क्यों आंसू गेरे। गिरते नीर सुमन बन जाते, हरि हरि तेरे प्राण पुकारे।

९६ए

प्रभु बालक हम तुम्हारे, ज्ञान का दीपक जला दो। दिल नहीं लगता हमारा, पार यह नदिया करा दो। ढूंढ़ता पथ ना उजाला, सारी अनजानी गलियाँ। फ़िर रहे हम तो भटकते, थामों तुम मेरी बैंया।

देख लो नजरें उठाकर, बह रहे यह नयन झर झर। दिल यहाँ कैसे मनाये, आते ना खायें ठोकर। कितने जन्मों का प्यासा, प्यास मेरी तू बढ़ा दे। प्राण यह तुमको पुकारे, तुझे पाऊँ या मिटा दे।

तुम बिना मुरझाई बगिया, फ़ूल भी खिलते नहीं है। मुझसे सावन है रूठा, कूक कोयल खो गई है। न बनो निर्मोही छलिया, थक गये दो ईश छैया। कुछ पलों का खेल बाकी, पांव पडू. आओ सैयां।

97प

मन हरि भजो भजन सुखदाई, उसकी हो जाओ शरणाई। हरि को जपो सहारा उसका, संकट सारे फ़िर कट जाई। सकल सृष्टि का मालिक है वह, मत कर मन तू अपना छोटा। तृष्णा हरपल नाच नचावे, उलझ गिरें मन करती खोटा।

जप ले मन हरि टपके अमृत, दिल का सुमन तेरा खिल जाई। जग की पीड़ा नहीं सतावे, ताप हरे मन वह सुखदाई। मन कर ले विश्वास उसी का, जनम मरण सब खेल उसी का। कठपुतली बन नाच रहे हैं, सुरति लगा साथी हरपल का।

मन भज पकड़ उसी का दामन, बहो जहां ले जाये सागर। अपना क्या यह तन भी ना ही, छूट रहे सब कूल यहाँ पर। हरि जप ले कट जाये रैना, पीड़ मिटे मन पाये चैना। पागल मन बन दास उसी का, लय हो जावेगा यह सुपना।

98प

हरि मैं हार गया ना आये, अँखियाँ मेरी नीर बहाये। अगम अगोचर पार न तेरा, अबल नाथ मैं कैसे पायें? बाट निहारें मेरी अँखियाँ, छल न करो तुम मुझसे छलिया। सदा साथ तुम पर ना दीखो, याद तुझे कर रोये अँखियाँ।

जन्मों से मैं भटक रहा हूँ, प्यासा मुझे पिला दे पानी। शीश धारूँ मैं चरण तुम्हारे, भीख प्यार की दे दे दानी। प्राण जपें यह हरपल तुमको, बसे नयन में मूरति तेरी। इतनी कृपा बनाये रखना, खो जायें ना यादें तेरी।

*यादों में तेरी खो जाऊँ, नयना मेरे रिमझिम बरसे। मनुआ और कहीं ना भटके, सांसे हरपल तुझको तरसे। जग की तृष्णा नहीं सतावे, तुझे पुकारूँ नैया खे दे। जलूँ विरह में तेरे मोहन, इतना ही वर मुझको दे दे।*99प

हरि ओम मन जपो तुम, अभी हो, कल कहाँ तुम। जग मोह क्यों बंधा तू, जानो यहाँ नहीं तुम। बन कर लहर बहो तुम, नदिया तुझे बहाये। कुछ पल की है झिलमिल, यह सांस फ़िर न आये।

मैं छोड़ो बह पगले, अपना नहीं यहाँ कुछ। तन जा रहा न रूकता, हरि का सभी यहाँ कुछ। हरि जप भागे मन डर, मन तू बसा हरी उर। कट जायेगी रैना, हरि ही तेरा रहवर।

हरि एक नाम सांचा, दे अन्त तक दिलासा। सब कूल छूटते हैं, हरि में सारी आसा। हरि को जपो मगन हो, सुपने सभी खतम हों। हरि ही चलावे नौका, मन जान क्यों न चुप हो।

100प

हरि मै तेरी बाट निहारूँ, पार लगा दे मेरी नौका। मेरा तू ही एक सहारा, तुझे मनाऊँ तू ही मन का। अँखियाँ नीर बहावें झर झर, कहाँ छिपे मेरे बन्शीधार। दिल का दर्द दिखाऊँ कैसे, चल चलकर मैं गिरता पथ पर।

मृगतृष्णा है यहाँ नचाती, अन्त लगे ना हाथ यहाँ कुछ। जल बिन मछली जैसे तड़पे, पाऊँ कैसे जतन करो कुछ। सदा रटूँ मैं तुमको हरपल, सांस सांस यह तुझे उचारे। प्रियतम इतना तो कर देना, नाथ गिरूँ मैं तेरे द्वारे।

*जीवनदाता जीवन तेरा, मर्जी चले सदा ही तेरी। कठपुतली हूँ नाथ तुम्हारी, तेरे हाथों में है डोरी। नयनों के आँसू सूखे ना, सदा चरण यह धोयें तेरे। सुपनों में भी तुम ही आओ, सुरति न टूटे वर दे प्यारे।*101ण

कौन सी मैं गली खोजूँ, ढूंढ़ता नाथ हारा। चले चल कर थक गये हम, चाहता मैं सहारा। बैठूँ मन्दिर में तेरे, बीते रैना काली। अश्रु मेरे चरण धोवें, नित खिलें ूल माली।

नीर बहते देख लो तुम, तुझे कैसे रिझाये। पास कुछ ना ूल सूखे, तुझे कैसे मनायें? नाथ हरपल तड़पता हूँ, बालक मैं तुम्हारा। निज कृपा रखना सदा ही, प्यार चाहूँ तुम्हारा।

आँख तेरी राह तकती, संधया ढलती जाती। मैं कहाँ जाऊँ जगत में, दर्द दिल का सुनाती। प्राण यह हरपल पुकारें, ना कहीं भटक जाये। प्रीति सदा बढ़ती जाये, कर कृपा तुझे पाये।

आदि तू ही अन्त तू ही, मन्जिल सबकी तू ही। ज्ञान दे तू संग मेरे, मिटे भ्रम यहाँ तू ही।

102ण

मीत जहाँ मेरे उड़ चल मन, यादें उसकी मुझको घेरे। उस बिन चैन न आये दिल में, अँखियाँ मेरी आंसू गेरे। जीवन यह क्यों सांसे लेता, उसके बिन जियरा ना लगता। इस जंगल में भटक रहा मैं, मुझे दिखा मन उसका रस्ता।

जलता दिल बरसे ना बादल, तृष्णा नाच नचावे हरपल। प्रियतम रंग में रंगना चाहूँ, कृपा करो हरि मुझमें ना बल। जग में कोई भी ना अपना, बीता जाता सारा सुपना। कूल छूटते जाते सारे, बसा हरी मूरति मन नयना।

*आशायें ले मनुआ नाचे, टूटें ठौर कहीं ना पावे। बैरागी बन मन दीवाना, गिरें नीर वह ूल खिलावे। प्रीति बढ़ा मन हरि हरि बोलो, मिटते संकट आंखे खोलो। कितना भटका क्या कुछ पाया, हरि बिन चैन न जीवन तोलो।*103ण

हरि मैं चरण तुम्हारे पड़ता, मुझे दिखा दो रस्ता। अज्ञानी हूँ बालक तेरा, नीर नयन में बसता। दीनबन्धु करूणा के कारण के सागर, पार लगा दो नौका। बीच भंवर में डोल रही है, जाये कित ले झौका।

जग के सर्जक जग के पालक, आंसू गिरते झर झर। तुम्ही बता दो जाऊँ कहाँ, अंधियारा पथ दूभर। सुख दुख की छाया के नीचे, सारा जीवन नाचे। चैन न आवे रोवे अँखियाँ, मुझसे आंखे मीचे।

चरण धोऊँ प्यार पाऊँ नित, हरपल तुझे मनाऊँ। जग की तृष्णा नहीं सतावे, वर तुमसे यह पाऊँ। जीवन दो दिन का भटके हम, मन यह कहीं न टिकता। तेरी कृपा सुगम हो रस्ता, इन नयनों में बसता।

104ण

तुम बिन नौका पार न होवे, डगमग डोले अँखियाँ रोवे। मेरे देवता तुम ना रूठो, चरण पड़े हम तुझे मनावे। जीवनदाता जीवन तेरा, कुछ भी नहीं यहाँ पर मेरा। सुख दुख के तू खेल खिलावे, तुम बिन तड़पे जियरा मेरा।

तेरे गुन गायें हम हरपल, जल बिन मछली तड़ रहा दिल। अंखियां खोजे राह निहारें, प्राण पुकारें, छिपो न अब मिल। चल चल हारा तुझे न पाया, ‍िर भी इस दिल को समझाया। नाम तुम्हारा ले मैं बहता, कृपा करो रोती यह काया।

*हरि हरि जपते बरसे नयना, तड़े सुन लें मेरे बयना। झूठी माया झूठी काया, कठिन हुआ यह सुन्दर सुपना। तेरे हाथों में जब डोरी, कठपुतली मैं ‍िर क्यों रोती। जैसा नाच नचावे नाचूँ, ज्ञान हमें दो पैंया पड़ती।*105ए

मन हरि जप इसमें लय हो जा, नगमें उसके ही गाता जा। जाती संधया ना भूल उसे, उसकी यादों में मन खो जा। सारे जग का वह ही पालक, चिन्तित क्यों मन जब वह रक्षक। सब चले इशारे उसके हैं, ना भूल चले सांसें जब तक।

हरि हरि जप ले कटते बन्धान, मन जान वही है सुखनन्दन। कर्ता बन जिया दुखावे क्यों, सब ओर नाचता कर वन्दन। हरि एक नाम है बस सांचा, दुखभंजक वह सुख का दाता। उसका मन जो भी धयान करे, दुख सागर से वह तर जाता।

नयनों में छवि नाचे उसकी, अंखियां बरसे जैसे सावन। कांटे भी ‍ूल बने मग में, दिल में हरि ज्योति जलाओ मन। व्यथित हृदय का चैन वही, नश्वर सब केवल सत्य वही। कितना भटको है चैन वही, सारे जग का मन मान मही।

प्यासे को मिल जाता है जल, हरि कृपा मिले बढ़ जाता बल। सब चाह यहाँ छोटी पड़ती, जब नयन बहाता गंगा जल।

106ए

हरि हरि जपूँ सभी कुछ तेरा, नहीं नाथ कुछ भी है मेरा। नाच नचाये वैसे नाचूं, न जानूँ कल कहाँ हो डेरा। अज्ञानी हूँ बालक तेरा, ममता सदा बनाये रखना। कृपा दृष्टि प्रभु तेरी चाहू, मेरे इन नयनों में बसना।

अनजानी गलियां पथ दुर्गम, प्यार मिले दुख हो जाता कम। चरण तुम्हारे नाथ पड़े हम, नयना मेरे बरसे रिमझिम। डगमग डोले नैया मेरी, बीच भंवर में जियरा रोवे। तुझे पुकारूँ मेरे खेवट, पकडू पांव नहीं अब सोवे।

*जियरा जलता ज्ञान नहीं कुछ, मेरी रोती है यह काया। बहते आंसू पास नहीं कुछ, शरण नाथ मैं तेरी आया। हरि हरि जपूँ कटे यह रैना, सुन लो मोहन मेरे बयना। दास तुम्हारे नहीं भूलना, अंखियां रोवें बस यह कहना।*107ए

चल कर आऊँ तेरे द्वारे, प्रभु पथ में उजियारा कर दो। मेरे देवता तुम ना रूठो, साहस मेरे दिल में भर दो। तृष्णा की दलदल में ‍ंसकर, नयनों में छाया अंधियारा। चहूँ तरु तेरा उजियारा, तुमको भूल हुआ जग खारा।

दुख को पाये तुझे भूलकर, नयना हरपल नीर बहायें। आँख खुले ना, तम में भटकें, मिले कृपा तब ही हम पायें। चल चल गिरूँ मैं ठोकर खाऊँ, अबल नाथ मैं नीर बहाऊँ। एक सहारा तेरा स्वामी, इस मन को रह रह समझाऊँ।

जिव्हा सदा तेरे गुन गाये, तुम न देखो कोई न देखे। इस जंगल में तेरे भरोसे, विनय नयन में तू ही दीखे। पास न कुछ भी झोली खाली, ना पांडित्य लिये मैं माली। ‍िर भी रो रो तुझे पुकारूँ, मिटती नहीं नयन की लाली।

स्वीकारो मैं दास तुम्हारा, तुम बिन नयन बहाये धाारा। सर्जक पालक तुम ही हो सब, तेरा ही बस एक सहारा।

108ए

हरि बिन कृपा नहीं कुछ होई, नीर बहायें अंखियां रोई। गिर जा मन हरि के चरणों में, नैया तेरी पार लगाई। आज यहाँ पर पता नहीं कल, अकड़ न छूटे जाता यह तन। प्रीति बढ़ा ले हरि से पगले, इस जीवन का सांचा है धान।

हरि हरि जप मन कटते सब दुख, हरि बिन नही यहाँ कोई सुख। मृगतृष्णा ने सदा नचाया, आंख खोलकर जग को ले लख। कुछ ना जाने कहाँ ठिकाना, बदले पल में रंग जमाना। देख हरी की लीलाओं को, उसमें हरपल सदा नहाना।

हरि हरि जप मन चैन मिलेगा, जगत जाल में ना उलझेगा। ठगनी माया नाच नवावें, नैया तेरी हरि खेवेगा। जान यहाँ पर नहीं यहाँ तू, नाचे सागर लहर बना तू। तेरे बस क्या, कठपुतली तू, हरि मर्जी से मन बह ले तू।पागल मन बस उसे पुकारो, सर्जक वह ही कभी न भूलो। जग का पालक वह ही दाता, मन तुम रजा उसी की चुन लो। हरि हरि जपो न और ठिकाना, बीता जाता सब अफ़साना। आदि अन्त वह सदा सत्य है, छोड़ो मैं को उसमें बहना।

109ण

हरि अपने चरणों में रख लो, यह सारा जीवन बीत गया। कुछ गलत हुआ कुछ सही हुआ, चल चल कर मैं तो हार गया। अनजान डगर पथ है दुर्गम, ꣾस माया में रोते हरदम। यह नीर बहाती हैं अंखियां, तड़पे जियरा मिल जा हमदम।

जपते ही रहे तुझे मोहन, नैया को पार लगा देना। अज्ञानी हूँ ना भूल मुझे, तुम प्यार मुझे अपना देना। जीवनदाता जीवन तेरा, सब चले इशारे तेरे हैं। कठपुतली बन हम नाच रहे, हरि सुरति बढ़ा जिय टेरे हैं।

तेरी गंगा में लय होकर, खो जायें हम मिट जाये गम। हरि मफ़ मुझे तुम कर देना, ना जान सकूँ कुछ भी ना दम। गाते गाते तेरे नगमें, कट जाये पथ आंखें है नम। अपने आंचल की छाया को, हरि विनय करूँ ना करना कम।

110ण

निशदिन बरसत नयन हमारे, बिछुड़े तुमसे हरि हम हारे। पल पल तेरी बाट निहारूँ, आ मिलो मोहि अब तो प्यारे। अगम अगोचर पार न तेरा, खोजूँ कित मैं तेरा डेरा। इन नयनों में हरि बस जाओ, सभी जगह हिर तेरा घेरा।

दास तुम्हारा नहीं भुलाना, अपनी दया सदा ही रखना। अज्ञानी जानू कुछ नाहीं, गिरूँ थाम हरि तुम ही लेना। धयान बढ़े हरि हरपल तेरा, कुछ भी यहाँ नहीं है मेरा। खड़ा द्वार पर भिखमंगा यह, कब होवेगा नाथ सुबेरा।

*दर दर डोलूँ चैन न पाऊँ, मन को कैसे मैं समझाऊँ। दया करो प्रभु हमें मिले पथ, नाथ तुम्हारी शरणा आऊँ। हरि हरि जपें कटे भ्रम सारे, इस जीवन को देने वाले। प्यार तुम्हारा बढ़ता जाये, झुका शीश हूँ तेरे हवाले।*111ण

हरि हरि कहते बीते जीवन, और बता क्या जग में है धान। किससे करें शिकायत जग में, अपना दर्द लिये घूमें जन। जीवनदाता जीवन हर्ता, कौन यहाँ मैं सब तू कर्ता। बहें नयन हरि याद तुझे कर, प्यार न कम हो विनती करता।

चल चल गिरूँ संभल न पाऊँ, कैसे इस दिल को समझाऊँ? सुरति तुम्हारी कभी न टूटे, बल दे चल दर तक मैं आऊँ। अंधियारे में कुछ ना दीखे, दया करो मैं दास तुम्हारा। बहता इन नयनों से जल है, मुझसे करना नहीं किनारा।

अपनी कृपा बनाये रखना, पार लगा देना यह किस्ती। हिचकोले खाती सागर में, अंखियाँ याद तुझे कर रोती। अज्ञानी पर बालक तेरा, कब होगा हे नाथ सुबेरा। चलचल कर प्रभु हार गया हूँ, दो वर मिले मुझे पथ तेरा।

112ण

तुझ मन्दिर में दीप जलाऊँ, बहते नीर करें यह पूजा। सारी खुशी सिमट कर आयें, इन नयनों में हरि तू बस जा। नीर मचलते आंखों में है, पड़े पैर में चल चल छाले। सारी दुनिया के रखवाले, नहीं भूलना ओ मतवाले।

अपनी कृपा बनाये रखना, मेरे जीवन के तुम हो धान। प्यार तुम्हारा चाहूँ ले सुन, हरि हरि कहते बीते जीवन। इस जंगल में तुझे पुकारूँ, साथ बता किसका मैं मानूँ। तुम बिन ज्ञान न आये छलिया, छलिया तू पर तुझको मानूँ।

*हरि हरि जपूँ चैन मन आये, दन्श जग के तू ही मिटाये। टप टप गिरें नयन से आँसू, इस दिल का वह सुमन खिलाये। विनती प्रीति बढ़ाना अपनी, सदा करूँ मैं पूजा तेरी। कर्मजाल से मुक्त हुआ मन, बहे लहर बन नदिया तेरी।*113ए

पिया मिलन की आस जगी है, मुँह न फेरो मोहन मुझसे। चल चल कर हम हार गये हैं, देखो मेरे नयना बरसे। कितने बीते जनम न पाया, इस जग में यों ही भरमाया। अँखियाँ नीर गिरायें हरपल, कैसी तुमने रच दी माया।

तेरा नाम जपूँ सुख पाऊँ, दन्श जगत के सभी भुलाऊँ। छोड़ न देना बहिया मेरी, तुझ चरणों में शीश नवाऊँ। हरि हरि कहते बीते जीवन, प्राण पुकारें तू मेरा धान। इन नयनों में हरि बस जाओ, मिट जाये फिर सारा क्रन्दन।

सकल सृष्टि का तुही रचियता, ना जानता कोई भी पता। पी पी रट मैं तुझे मनाऊँ, हरी कर देना माफ़ तुम खता। प्यासा मुझे पिला दे पानी, जाम पिला दे अपना दानी। पी तेरी मदिरा खो जाऊँ, लख ले इन नयनों का पानी।

114ए

हरि शरणा मैं तेरी आऊँ, पीड़ा अपनी यहाँ मिटाऊँ। दुख भंजक तुम सर्जक मेरे, अपना दिल मैं तुझे दिखाऊँ। अगम अगोचर पार न तेरा, सभी जगह पर तेरा घेरा। ठगनी माया नाच नचावे, अँखियाँ रोवें तुमको टेरा।

अपनी दया बनाये रखना, बहते हरपल मेरे नयना। मिले प्यार पथ में सुख मिलता, पीड़ मिटे हरि मेरी सुनना। हरि हरि गायें भूल जगत को, छिपा हुआ तुझमें ही सब सुख। पागल मनुआ पर ना समझे, बिन हरि कृपा न हो अन्तर्मुख।

*मन हरी जप हो शीतल काया, तपती धारती पर वह छाया। लाज रखेगा मन हरि तेरी, इन गलियों में तू भरमाया। बसो नयन में मन कर विनती, लय हो जावे हरि में यह मन। प्यार बरसता रहे सदा फिर, खिल जाता मुरझाया उपवन।*115ए

ओम कहो मन ओम कहो मन, सब ही मन के दुख दूर करो। कोई भी ना और सहारा, जप कर संशय सब दूर करो। इस विराट मेले में सब ही, दौड़ते पर जायें कहाँ पर? नयन बहायें जब जब पानी, प्राण पुकारे छिपे कहाँ पर?

ओम कहो कटते सब बन्धान, ओम कहो वह ही सुखनन्दन। ओम समाये सांस सांस में, उसकी लीला कर ले वन्दन। ओम कहो मिटते सारे भय, घूमे जग में होकर निर्भय। मन की मिटती सब चिन्ताएँ, लहर मिटे हो सागर में लय।

जप आँसू को क्यों ढलकावे, बिन उसके मन चैन न पावे। कितना भटको नही किनारा, ओम ओम जप वही बहावे। ओम की लीला ओम जाने, उसके नगमें मन तू गा ले। आदि सत्य वह अन्त सत्य है, मैं को छोड़ लहर बन बहले।